ज्योतिष टाइम्स

मार्गशीर्ष-पौष शक् १८९५, सम्वत्, २०३०, दिसम्बर १९७३

सम्पादकीय—

● ज्योतिष-विज्ञान-संस्थान

अक्टूबर १९७३ के 'ज्योतिष टाइम्स' में हमने भारत की राजसत्ता के समक्ष अ० भा० ज्योतिष-विज्ञान-संस्थान (आल इंडिया इंस्टीट्यूट आफ एस्ट्रालाजिकल साइंस) के निर्माण की योजना प्रस्तुत की है। गनीमत है कि योजना ने कतिपय सुधीजनों का ध्यान आकर्षित किया है और उस पर कुछ चर्चा भी प्रारंभ हुई है। इस संदर्भ में यह प्रश्न हमारे सामने आया है कि संस्थान में हम "ज्योतिष के तीनों विभागों में से किसी एक में विशेष क्षमता रखने वाले महानुभावों के साथ हम १२ भावों में से किसी एक में भी विशेष गति रखने वालों को भी एकत्रित करना क्यों आवश्यक समझते हैं? संक्षेप में हम भावों के विशेषज्ञों पर बल क्यों दे रहे हैं? प्रश्न को समाधान देने के लिए एक बार फिर हम अपने विचार स्पष्ट करने का प्रयास करते हैं।

नवम्बर के 'ज्योतिष टाइम्स' में कह चुके हैं कि ज्योतिष को पुरातत्व के चिह्नों जैसे संरक्षण की आवश्यकता नहीं है। ज्योतिष मानव जीवन के प्रत्येक अंग को प्रभावित कर उसके भविष्य का निर्माण करने वाला पूर्ण विज्ञान है। ज्योतिष की यह महत्ता आचार्य वराह मिहिर की 'बृहत संहिता' की विषय सूची देख लेने से ही सिद्ध हो जाती है। कौन नहीं जानता कि आचार्य प्रवर ने मानव जीवन से संबंध रखने वाली कोई भी वस्तु नहीं

वर्ष : १ अंक : ८ | सम्पादकीय और प्रकाशन कार्यालय : संस्कृत स्वाध्याय तथा ज्योतिष विज्ञान मंदिर, २५/३०, पूर्वी पटेलनगर, नई दिल्ली-८ दूरभाष : ५८३९१९, ५८५७०० | मूल्य : एक प्रति १) वार्षिक : १२ रुपये

छोड़ी, यहां तक भवनों, रत्नों और पशुओं पर भी व्यापक दृष्टि डाली है और उनके संबंध में विस्तार के साथ निर्देश प्रदान किये हैं। पश्चिम में भी ज्योतिष को इसी दृष्टि से देखा जाता है। शेक्सपियर का यह कथन उसी लक्ष्य का प्रमाण है कि—(आकाश के नक्षत्र हमारी स्थिति का नियंत्रण करते हैं)।" आज के पश्चिम में ज्योतिष का इसी दृष्टि से विकास हुआ है फलतः उसके अंगों-प्रत्यंगों मेडिकल स्ट्रालोजी, सेक्स स्ट्रालोजी, अंक विद्या और पशु विद्या आदि पर विस्तृत साहित्य प्राप्त होता है।

प्राचीन साहित्य का जो अवशेष आज हमें प्राप्त है उससे ज्ञात होता है कि ज्योतिष की यह महत्ता ग्रन्थों तक ही सीमित नहीं थी अपितु उसका व्यक्तिगत, सामाजिक और राष्ट्रीय संकटों में भी इसका उपयोग होता था जिसका पर्याप्त लाभ मिलता था। महर्षि वशिष्ठ ने दशरथ की कुण्डली देखकर ही पुत्रेष्ठि यज्ञ का विधान किया था जिससे वह संतानें हुई थी जिनका आदर्श आज तक स्मरण किया जाता है। आदि कवि वाल्मीकि की रामायण का प्रारंभ भी ज्योतिष के अनुसार दी गई उस सूचना से हुआ था कि दशरथ का जीवन संकट में है और संकट उनके ऐसे कर्मों का परिणाम है जिनका प्रतिकार नहीं हो सकता। फलतः राम के राज्याभिषेक का तुरंत प्रबंध किया गया था। सावित्री ने सत्यवान को जब अपना वर चुन लिया था तब देवर्षि नारद ने बताया था कि यह तो एक ही वर्ष जीवित रहेगा। सावित्री ने अपनी साधना से प्रतिकार किया था और यमराज से सत्यवान को पुनः प्राप्त कर लिया था। बायबिल की एक कथा के अनुसार शकुन विचारक यूसूफ ने मिस्र के राजा फिरौन को बताया था कि सात वर्ष तक सुकाल रहेगा जिसमें आवश्यकता से अधिक अन्न उत्पन्न होगा। उसके बाद सात वर्ष तक भयंकर अकाल रहेगा और लोग दाने-दाने के लिए तरस जायेंगे। फिरौन ने यूसुफ से कहा कि तुम इसके प्रतिकार का प्रबंध करो। यूसुफ ने सुकाल के दिनों में पूरे मिस्र में घूम-घूम कर अन्न की बचत कराई और स्थान-स्थान पर उसके भण्डार भर लिये। अगले वर्षों में जब अकाल सारी पृथ्वी पर फैल गया और मिस्र में भी उसका रूप भयंकर हो गया तब यूसुफ ने सुरक्षित भण्डार खुलवाये और अन्न बेचने लगा। सारी पृथ्वी के लोग उससे अनाज मोल लेने के लिए आने लगे क्योंकि सारी पृथ्वी पर भयंकर अकाल था और मिस्र में अनाज मौजूद था।

इन उदाहरणों से सिद्ध होता है कि ज्योतिष वह विज्ञान है जो मनुष्य को भविष्य के प्रति सतर्क करता है और अनिष्ट के प्रतिकार का अवसर देता है। हम चाहते हैं कि ज्योतिष की इस अद्भुत शक्ति से व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के निर्माण में सहायता ली जाय और इष्ट की प्राप्ति तथा अनिष्ट के प्रतिकार की व्यवस्था की जाय। आज की राज्य शक्ति ज्योतिष से भविष्य की जानकारी ले और उसके अनुसार अपने आपको सन्तप्त करे। व्यक्ति से ही जब समाज बनता है तब उत्तम एवं कल्याण-कारी समाज की रचना के लिए जातक पर उसके जन्म-काल से ही सतर्क दृष्टि रखी जाय, उसकी जन्मकुण्डली के अनुसार उसके चरित्र का सावधानी के साथ विकास और निर्माण किया जाय। जन्मकुण्डली के अनुसार ही उसे शिक्षा दिलवाई जाय, जन्मकुण्डली का मिलान करके ही उसका विवाह किया जाय जिससे उसका दाम्पत्य जीवन अपेक्षाकृत सुखमय एवं वैषम्य रहित हो। जातक के स्वास्थ्य के संबंध में भी जन्मकुण्डली की सहायता ली जाय। आज लोग चिकित्सक से तब परामर्श करने जाते हैं जब पानी प्रायः सिर के ऊपर आ जाता है। बीमा-व्यवस्था लाते मेडिकल 'चैकअप' कराते हैं परंतु कुण्डली नहीं देखते। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के जनक हिप्पोक्रैटस (Hippocrates) के उस कथन पर विचार नहीं किया जाता कि—"A Physicin witnout A Knowlede of Astrology has no right to call himself a Physicin."

अर्थात् ज्योतिष का ज्ञान न रखने वाला चिकित्सक अपने आपको चिकित्सक कहने का अधिकार नहीं रखता।

शिक्षा के क्षेत्र में आज जो आपाधापी है वह राष्ट्र की तरुण शक्ति को उसके निर्माण में नहीं लगाती अपितु

बेकारी के साथ अनेक व्याधियों को जन्म देती है। इसका बड़ा कारण यही है कि विद्यार्थी की कुण्डली और प्रकृति-प्रवृत्ति पर विचार नहीं किया जाता और मनमानी से काम लिया जाता है या गतानुगति के प्रवाह को महत्व दिया जाता है। दिल्ली विश्वविद्यालय के ख्याति प्राप्त डा० चन्द्रभानु गुप्त स्वयं संस्कृत के प्रगाढ़ पण्डित और काशी के एक प्राचीन एवं प्रतिष्ठित परिवार से संबंधित है। अपने चिरंजीव को वह स्वभावतः संस्कृत का विद्वान बनाना चाहते थे परंतु उसकी रुचि उस विषय की ओर नहीं थी। डाक्टर साहब ने उसकी कुण्डली हमें दिखाई, उसमें बृहस्पति प्रबल नहीं था, शनि बलवान था। हमने परामर्श दिया कि चिरंजीव के लिए इंजीनियरिंग की शिक्षा अनुकूल रहेगी। परामर्श पर अमल किया गया। आज यह देश का माना हुआ इंजीनियर है, उसकी प्रतिभा का लाभ उसके परिवार को ही नहीं समाज और राष्ट्र को भी मिल रहा है।

ज्योतिष-विज्ञान-संस्थान की योजना हमने इसी विचार से प्रस्तुत की है कि महान् पूर्वजों की उस निधि से लाभ उठाने का मार्ग सरल हो जाय और काल या उपेक्षा के कारण त्रिकालज्ञ ऋषियों की देन में जो च्युति-विच्युति आ गई है वह भी क्रूर हो जाय। संस्थान में प्रत्येक भाव के विशेषज्ञ को सम्मिलित करने पर विशेष बल हमने इसलिए दिया है कि हृदय के रोगी को जैसे दांतों के चिकित्सक को नहीं सोंपा जाता वैसे ही प्रथम भाव की समस्या के लिए दशम भाव में दक्षता रखने वाले की शरण न ली जाय। किसी एक का कई भावों में विशेष गति रखने वाले विशेषज्ञ वर्तमान हैं।

हम स्वयं राजयोग में विशेष रुचि रखते हैं, पंचम, द्वितीय और तृतीय भाव के विशेषज्ञों से भी परिचित होने के अवसर मिले हैं। उनकी प्रवृत्ति और साधना का लाभ उठाकर भारतीय ज्योतिष के विभिन्न अंगों-उपांगों को वैसे ही पुष्ट किया जा सकता है जैसे पश्चिम में यह पुष्ट हो रही है या जैसे चिकित्सा विज्ञान की विविध शाखाओं का विकास हो रहा है। 'ज्योतिष टाइम्स' प्रारंभ से ही इसी दृष्टि के अनुसार सामग्री प्रस्तुत कर रहा है, परंतु काम बहुत बड़ा है और ज्योतिष-विज्ञान-संस्थान ही इसे पूर्ण कर सकता है।

हम समझते हैं कि ज्योतिष-विज्ञान-संस्थान के संदर्भ में हमने अपना दृष्टिकोण काफी स्पष्ट कर दिया है। हम चाहते हैं कि ज्योतिषानुरागी महानुभाव इस योजना में पूरी रुचि लें और भारत की राष्ट्र शक्ति से प्रबल अनुरोध करें कि वह उस अत्यंत उपयोगी संस्थान के निर्माण में विलंब न करे। यह कहावत आज भी सत्य है कि जो बच्चा रोता नहीं उसे मां भी दूध नहीं पिलाती।



सूचना

हम बड़े खेद के साथ सूचित करते हैं कि कागज की भारी कमी के कारण इस अंक के कुछ स्थायी स्तम्भ इस बार रोक दिये गए हैं।

—सम्पादक

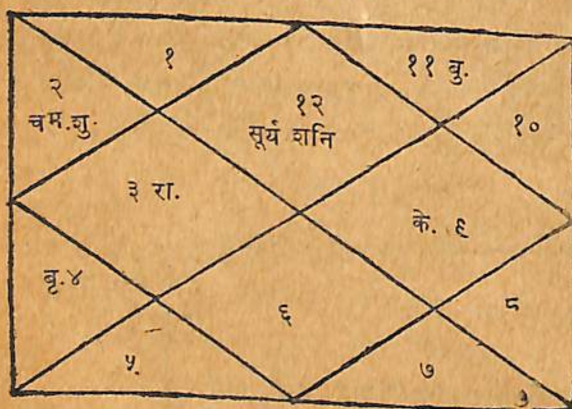
बाबू जगजीवनराम जी !

● जगन्नाथ भसीन

भारतीय राजनीति के क्षेत्र में श्री जगजीवन राम जी रक्षा मन्त्री भारत सरकार का सहयोग बड़े महत्व का रहा है। आपका सम्बन्ध दलित वर्ग से होते हुए भी आप देश के उच्च पद पर आसीन हुए हैं यह बात जहां आपके चरित्र में सराहनीय है वहां ज्योतिष शास्त्र के विद्यार्थियों के लिये रुचि से खाली नहीं है।

आप का जन्म आरा, बिहार में $\frac{4}{5}$।४ १६०८ को प्रातः सूर्योदय से १८ मिनट पूर्व ५ बज कर २३ मिनट पर हुआ। आप की जन्म कुण्डली तथा ग्रह स्थिति निम्न प्रकार से है।

जन्म कुण्डली



ग्रह स्पष्ट—

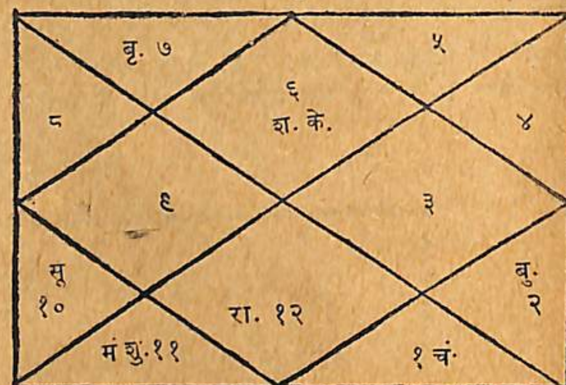
सूर्य ११-१२-१४, चन्द्र १-१०-२०, मंगल १-५-४३, बुध १०-२६-५, गुरु ३-११-३ शुक्र १-६-२६, शनि ११-६-२८, राहु २-१६-५२, लग्न ११-६-३६

जन्म समय चन्द्र स्पष्ट १-१०-२० होने से विंशोत्तर दशा पद्धति के अनुसार चन्द्र की महादशा के शेष वर्षादि ६-६-० और दशा क्रम इस प्रकार था।

चन्द्र	—	६-६-०	
मंगल	—	७-०-०	
राहु	—	१८-०-०	
गुरु	—	१६-०-०	
शनि	—	१६-०-०	आदि

सबसे पहली वस्तु जो इस जन्म कुण्डली में दृष्टिगोचर होती है वह गुरु की उच्चता है गुरु की इस उच्चता का

नवांश कुण्डली



अर्थ है कि लग्न तथा सूर्य लग्न दोनों असाधारण रूप से बलवान हो चुके हैं क्योंकि गुरु सूर्य लग्न का भी स्वामी है और लग्न का भी। इतना ही नहीं कि गुरु उच्च है इसकी दृष्टि भी लग्न पर पूर्ण क्यों पड़ रही है जिसके

फलस्वरूप लग्न और सूर्य लग्न दोनों बलशाली हो चुके हैं क्योंकि ज्योतिष शास्त्र का प्रसिद्ध नियम है कि "यो यो भावः स्वामी युक्तो दृष्टो वा तस्य तस्यास्ति वृद्धि" अर्थात जन्म कुण्डली में जो जो भाव अपने स्वामी द्वारा युक्त अथवा दृष्ट हो उस-उस भाव की वृद्धि होती है। यहां लग्न और सूर्य दोनों की वृद्धि हो रही है। इतना ही क्यों उक्त गुरु की दृष्टि का शुभ फल दशम भाव को भी अच्छी प्रकार से मिल रहा है क्योंकि गुरु की दूसरी राशि धनु दशम स्थान में पड़ती है। इस प्रकार हम ने देखा कि गुरु की दृष्टि के कारण लग्न सूर्य तथा दशम भाव तीनों प्रफुल्लित हो रहे हैं। अब चूंकि लग्न सूर्य तथा दशम भाव इन तीनों में प्रतिष्ठा है। यह योग मान प्रतिष्ठा तथा यश के बढ़ाने वाला है और साथ ही साथ राज्य सत्ता दिलाने वाला भी है। परन्तु शनि का प्रभाव भी लग्न, सूर्य तथा दशम पर है अतः यदा कदा मान प्रतिष्ठा में वाधा का योग भी बनता है।

गुरु की उच्च स्थिति का अध्ययन हम कई प्रकार से कर सकते हैं। एक प्रकार का उल्लेख तो हम कर चुके हैं। दूसरा प्रकार दशम भाव के गुरु के आधिपत्य द्वारा उत्पन्न होता है। यहां यह बात नोट करने की है कि गुरु की मूल त्रिकोण राशि धनु दशम स्थान में है। दूसरे शब्दों में गुरु मुख्यतया दशम अर्थात राज्य भाव का फल करेगा। अब एक और बात यह भी नोट कीजिये कि कि दशमेश होकर गुरु तो उच्च है ही गुरु जिस राशि में अर्थात कर्क में उच्च हुआ है उस का स्वामी चन्द्र पुनः उच्च है। ऐसी स्थिति दशम भाव के लिये अर्थात राज्य के अधिकार के लिए विशेष रूप से लाभ-प्रद है। यह कारण है कि कई मन्त्रिमंडल आए और मन्त्रिमंडल गये परन्तु बाबु जी के यश एवं राजसत्ता अधिकार में कोई अन्तर नहीं पड़ा।

यह लग्न स्थिति तो लग्न से तथा सूर्य से दशमेश की हुई। अब आइये चन्द्र लग्न से दशमेश की स्थिति पर भी तनिक विचार करलें क्योंकि जो फल लग्न से और चन्द्र लग्न दोनों से प्राप्त होता हो वह स्थायी, मूल्यवान तथा मिश्रित होता है। चन्द्र लग्न से दशम भाव का स्वामी शनि हैं और वह राज्य "कारक" सूर्य के साथ स्थित है। इन दोनों राज्य द्योतक ग्रहों की स्थिति चन्द्र लग्न से लाभ स्थान में हुई है जिस का अर्थ है राज्य की प्राप्ति अत्यन्त लाभ उच्च गुरु की इन दोनों पर दृष्टि ने उस प्राप्ति को और भी शक्तिशाली और निश्चित बना दिया है। इस प्रकार राज्य की प्राप्ति लग्न चन्द्र लग्न और सूर्य लग्न तीनों ही लग्नों से सिद्ध होती है

गुरु की उच्चता को आप पञ्चम भाव की दृष्टि कोण से भी विचार सकते हैं। उच्च गुरु की पञ्चम भाव में स्थिति पञ्चम भाव को बढ़ाती है इस में किसी को क्या संदेह हो सकता है? पञ्चम भाव मन्त्रणा शक्ति तथा विचार शक्ति का माना गया है अतः स्पष्ट है कि बाबू जी में देश की समस्याओं को तथा राजनीति को परखने तथा जांचने की सूझबूझ आसाधारण रूप से विद्यमान है।

गुरु की दृष्टि प्रायः उस भाव को बढ़ाती और ऊंचा करती है जिस पर कि यह पड़ रही हो और जिस भाव पर यह दृष्टि पड़ रही हो यदि उस भाव का स्वामी भी इस भाव को देखता है तब तो जैसा हम कह आये हैं उस भाव की विशेष वृद्धि होती है। बाबू जी की कुण्डली में मंगल अपनी पूर्ण सप्तम दृष्टि से भाग्य भवन अर्थात नवम घर को देखता है और उच्च गुरु उसी नवम भाव को अपनी पञ्चम पूर्ण दृष्टि से प्रभावित कर रहा है। परिणाम यह कि नवम भाव आसाधारण रूप से खिल उठा है। नवम भाव सर्वोत्तम भाव है। यह भाव राज्य-कृपा, दैवी-कृपा, भाग्य तथा धर्म सभी का द्योतक है। फल यह निकला कि राज्य की प्राप्ति दशम के अतिरिक्त नवम भाव से भी हो गई।

जिस प्रकार गुरु की निज राशि पर दृष्टि के फ़ल स्वरूप शुभ फल की प्राप्ति उस राशि वाले भाव के अतिरिक्त दूसरी राशि धनु वाले भाव को भी हुई, इसी मंगल की निज भाव (नवम) पर दृष्टि का शुभ फल द्वितीय

भाव को भी मिल रहा हैं जहां कि मंगल की दूसरी राशि अर्थात मेष राशि विद्यमान है। दूसरे शब्दों में धन भाव की आसाधारण वृद्धि भी साथ ही साथ हो गई।

लग्न से नवम भाव का अध्ययन हमने किया। अब आइये चन्द्र लग्न से भाव को देखें। चन्द्र लग्न से नवम भाव का स्वामी शनि है, उस पर और नवम भाव दोनों पर गुरु की पूर्ण दृष्टि है अतः चन्द्र लग्न से नवम भाव भी प्रर्याप्त रूप से बली है। सूर्य लग्न से, चन्द्र लग्न से तथा लग्न से नवम भाव अथवा उसके स्वामी का बलवान होना जहां राज्यसत्ता और धन देता है वहां वह योग धर्म में रूचि भी उत्पन्न करता है और धर्म शास्त्रों के अध्ययन को बढ़ाता है। अतः यह योग बाबू जी की प्रबृति का सूचक है।

जहां तक सन्तान का प्रश्न है पुत्रकारक गुरु का पुत्र स्थान में स्थित होना अच्छा नहीं क्योंकि गुरु पञ्चम भाव में छटे भाव का स्वामी होकर मुख्यतया कार्य कर रहा है अतः केतु अविष्ठित राशि का तथा पापी ग्रहों सूर्य तथा राशि का स्वामी होने से यह सन्तान भाव के लिए लाभ-प्रद नहीं। उधर पञ्चमेश चन्द्र भी एक स्त्री ग्रह होकर स्त्री ग्रह शुक्र के साथ मंगल और शनि दोनों से पीड़ित हैं अतः पञ्चमेश चन्द्र भी निर्बल होने के कारण तथा स्त्री ग्रह होने के कारण पुत्र देने में असमर्थ है ही उच्च गुरु की दृष्टि पञ्चम भाव पर चूंकि पड़ रही है इस कारण से एक पुत्र की प्राप्ति का योग बना है। चन्द्र के साथ शुक्र होने से एक पुत्री की प्राप्ति का भी योग है।

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार शुक्र तथा मंगल की युति काम-वासना को बढ़ाती है यह योग इस कुण्डली में उपस्थिति है। सप्तमेश बुध का योग स्थान (द्वादश) में होना भी इसकी पुष्टि करता है परन्तु यही योग मन में उत्साह साहस तथा पराक्रम की सृष्टि भी करता है।

ज्योतिष शास्त्र के विद्यार्थियों के लिए यह कुण्डली बहुत शिक्षा-प्रद है। जन्म समय पर चन्द्र दशा के शेष वर्षादि ९-९-० थे। इस प्रकार ६४-४-१२ अर्थात १७-८-१९७२ से शनि की महादशा में राहु की भुक्ति चल रही है।

यह भुक्ति २-१०-६ वर्ष रहती है अर्थात २३-६-१९७५ तक रहेगी। राहु एक छाया ग्रह है। यह ग्रह अपना फल न देकर उन ग्रहों का फल करता है जिन द्वारा यह प्रभावित होता है। इस कुण्डली में मुख्यतया राहु पर गुरु मंगल और सूर्य दशम में स्थित होकर प्रभाव डाल रहे हैं, अतः राहु अपने समय में सूर्य, गुरु तथा मंगल का फल करेगा। तीनों ग्रह लग्न के मित्र हैं और मीन लग्न के लिए शुभ हैं। अतः यह समय राज्य आदि की दृष्टि से बाबू जी के लिये उत्तम चल रहा है।

नक्षत्र मण्डल की रासलीला और ब्रज मण्डल की रासलीला

● डा० जगदीशचन्द्र सम्राट्
एम. ए. पी-एच. डी.

"एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति" (१) (परम सत्ता एक है, विद्वान् उसका अनेक प्रकार से वर्णन करते हैं) "सदेव सौम्येदमग्र आसीदेकमेवाद्वितीयम्" (२) (हे सौम्य ! सृष्टि से पूर्व सत् तत्त्व एक ही एवम् अद्वितीय था) इत्यादि वेदवाक्यों द्वारा घोषित सत्य ही पुराणों द्वारा समर्थित तथा सम्पोषित हुआ है। वेद के तत्त्व एवं महत्त्व के सर्वश्रेष्ठ व्याख्याता महर्षि वेदव्यास ने—

वदन्ति तत्त्वविदस्तत्त्वं यज्ज्ञानमद्वयम् ।
ब्रह्मेति, परमात्मेति, भगवानिति शब्द्यते ।। (३)

इन शब्दों से तत्त्व वेत्ताओं द्वारा साक्षात्कृत तत्त्व को अखण्ड ज्ञानात्मक अद्वय तत्त्व घोषित किया है। यही तत्त्व ब्रह्म, परमात्मा, भगवान् आदि नामों से अभिहित किया जाता है।

यह अखण्ड ज्ञानात्मक तत्त्व अथवा अद्वैत सत्ता अपने स्वभाव से ही एक से अनेक रूप धारण करती है। अपनी अखण्डरूपता में यथावत् रहते हुए अनेकरूपता को धारण कर लेना उस परम सत्ता का स्वभाव है। यह उसका लीला विस्तार है। उपनिषदों ने "एकोऽहं बहुस्याम् (१) के ईक्षणसिद्धान्त द्वारा लीला विस्तार के स्वभाव का संकेत किया है।

"असौ गुणमयैर्भावैर्भूत सूक्ष्मेन्द्रियात्मभिः ।
स्वनिर्मितेषु निर्विष्टो भुंक्ते भूतेषु तद्गुणान् ।। (२)

श्रीमद्भागवत के इन शब्दों द्वारा उपर्युक्त स्वभाव का ही उल्लेख किया गया है—परम सत्ता अपने गुणमय (सत्त्व रजस्तमस् आदि गुणों वाले) भाव (प्रकटीकरण) से अधिभूत, अधिदैव और अध्यात्म सृष्टि की अपने में ही रचना करता है और स्वरचित सृष्टि में प्रविष्ट हुआ जीवों के रूप में गुणमयी सृष्टि का उपभोग करता है—यह उसका स्वभाव ही है।

'स्वभाव' शब्द बड़ा रहस्यगर्भित शब्द है। सृष्टि रचना का क्या कारण है ? यह प्रश्न उठाकर अनेक पक्षों पर विचार करते हुए सिद्धान्त रूप में घोषित किया गया है—"देवस्यैष स्वभावोऽयमाप्त कामस्य का स्पृहा ?" (३)

अर्थात् सृष्टि परमात्मदेव का स्वभाव है, किसी स्पृहा (कामना) का परिणाम नहीं, क्योंकि पूर्ण काम में क्या स्पृहा हो सकती है ? स्व + भाव = स्वभाव, इस प्रकार

(१) ऋग्वेद १।१६४।४६
और अथर्ववेद ६।१०।२८
(२) छान्दोग्य उपनिषद् ६।२।१
(३) श्रीमद्भागवत १।२।११

(१) तैत्तिरीयोपनिषद् २।६
(२) श्रीमद्भागवत १।२।३३
(३) माण्डूक्य कारिका, आगम प्रकरण ६।

विग्रह करते हुए यह अर्थ गृहीत होता है कि स्व (आत्मा) ही भावरूप (प्रकटित रूप) में सृष्टि है। स्व का अर्थ है सभी का अपना आप अर्थात् आत्मा। आत्मा अपनी पारमार्थिकता में एक ही है और अद्वितीय है। वह अपने अद्वितीय अखण्ड रूप को आवृत कर लेता है और विक्षेप रूप (अनेक रूप) में नाना रूपात्मक सृष्टि रूपता धारण कर लेता है। स्व अर्थात् आत्मा का भाव अर्थात् रूपान्तर रूप में प्रकटीकरण ही स्वभाव है।

'स्व' है सत्ता सामान्य अथवा मूल अस्तित्व और भाव है अस्ति (सत्ता) का भवति रूप अपना लेना, (Being) का (Becoming) रूप धारण कर लेना। यह स्वभाव ही अनिर्वचनीय स्वभावा प्रकृति अथवा माया है। आवरण और विक्षेप इसकी दो शक्तियां हैं। विक्षेप रूप में परिणतियां, परिवर्तन, प्रकारताएं, गतिविधियां और भेद विस्तार होते रहते हैं। आवृत अधिष्ठान रूप परम सत्ता (परमात्मा) यथावत् अखण्ड, अविकृत रहता है। यह स्वभाव लीला सूक्ष्म एवं विराट् में समान रूप से प्रवर्तित है। क्रान्तदर्शी मनीषियों ने "यत् पिण्डे तद् ब्रह्माण्डे" के सिद्धान्त द्वारा पिण्ड अथवा व्यष्टि शरीर में और ब्रह्माण्ड अथवा समष्टि शरीर में एक ही स्वभाव लीला का संकेत किया है।

उपर्युक्त वर्णित स्वभाव लीला ही रासलीला है। "रसो वै सः, रसं ह्येवायं लब्ध्वाऽऽनन्दी भवति"(१) "आनन्दाद्ध्येव खल्विमानि भूतानि जायन्ते, आनन्देन जातानि जीवन्ति आनन्दं प्रयन्त्यभिसंविशन्ति इति" (२) इत्यादि उपनिषद् वाक्यों द्वारा रस स्वरूप अथवा आनन्द स्वरूप परमात्मा के ही रसयिता (भोक्ता) और रसनीय (भोग्य) रूपों में रूपान्तरित होकर अपने रसास्वाद से आनन्दित होने का निर्देश किया गया है। पुराणों द्वारा भी इसी रहस्य को अधिक लालित्य सहित प्रस्तुत किया गया है। "सृष्टि से पूर्व श्रीकृष्ण एकाकी थे। उनमें सिसृक्षा का उदय हुआ। स्वेच्छामय भगवान् अपनी इच्छा

(१) तैत्तिरीयोपनिषद् २।७
(२) तैत्तिरीय उप० ३।६

से ही दो रूपों में रूपान्तरित हो गये। वाम भाग से स्त्री रूप का और दक्षिण भाग से पुरुष रूप का प्रकटीकरण हुआ। कामाधार रूपिणी अतीव कमनीय अपनी ही रसनीय रूप में परिणति को देखकर महाकामी (एकोऽहं बहुस्याम् इस मूल कामना के कारण परमात्मा ही महाकामी है) रासोल्लास रसिक रसिकेश्वर ने उस रासेश्वरी के साथ रास मण्डल में रासक्रीड़ा की(१) समस्त प्रपञ्च का विस्तार इस रसक्रीड़ा का परिणाम है।

श्रीमद्भागवत में भी "निरस्तसाम्यातिशयेन राधसा स्वधामनि ब्रह्मणि रंस्यते नमः"(२) इस कथन द्वारा परोक्षवाद का आश्रय लेकर उपर्युक्त रहस्य को कहा गया है। राधस् पद से वाच्य राधा रस स्वरूप ब्रह्म की सिद्धि अथवा शक्ति है। यह सिद्धि निरस्त साम्यातिशय (जिसके समान और जिससे बढ़कर कोई सिद्धि नहीं) सिद्धि है। "राध् साध् संसिद्धौ" इस अर्थ के अनुसार राध् का अर्थ संसिद्धि (सम्यक् सिद्धि) है। सिद्धि का अर्थ है रूपान्तर प्राप्ति। रसस्वरूप परमात्मा का रसास्वादार्थ अपने को रसनीय रूप में रूपान्तरित कर देना। इस रूप का रसास्वाद लेने के लिए परमात्मा ही स्वयं रसिक अथवा रसयिता रूप में रूपान्तरित हो जाता है। (दर्शन शास्त्र इसे प्रकृति पुरुष के भोग रूप में वर्णन करते हैं)। रसनीय अथवा भोग्यरूप में रूपान्तरित परम सत्ता ही राधा है। राधा की अभिन्नांशस्वरूपा असंख्य गोपियां हैं जो राधा की कामव्यूहरूपा है। रसिक रूप है माधव और रसनीय रूप है राधा।

नभ के नील निकुञ्ज में चल रही नाक्षत्र रासलीला को समझने के लिए रासलीला की आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक रासलीला की अर्थवत्ता की परस्पर विचित्र अनुरूपता है। भागवत में वर्णित रासलीला विशेष आध्यात्मिक रहस्य लिए हुए है, जिसका संकेत साथ-साथ दे दिया गया है। "जैसे छोटा-सा शिशु अपनी

(१) देवी भागवत ९।२।२६।३६
(२) श्रीमद्भागवत २।४।१४

परछाई के साथ खेलता है उसी प्रकार लक्ष्मी पति भगवान् श्रीकृष्ण ने आलिङ्गन, अंग स्पर्श, सप्रेम परस्पर समीक्षण और उद्दाम विलास, हास सहित व्रज सुन्दरियों के साथ क्रीड़ा की"(१) "स्वयं स्वरति (अपने आप से स्वयं रमण करने वाले) भगवान् ने गोपियों के साथ क्रीड़ा की"(२) इत्यादि संकेतों द्वारा रासलीला की अप्राकृतता अथवा अलौकिकता का ही कथन किया गया है। बिम्ब और प्रतिबिम्ब की क्रीड़ा के उदाहरण द्वारा एक रहस्यपूर्ण साधना भूमि का परोक्ष रूप से कथन किया गया है। परोक्ष कथन "परोक्ष प्रिया इवहिदेवा"(३) के सिद्धान्त के अनुसार है।

चन्द्रमा स्वच्छ आकाश में अचञ्चल रूप में यथावत् रहता है और सरोवर अथवा सरिता की लहर लहर में, लहर लहर की चञ्चलता के कारण उसके प्रतिबिम्ब चञ्चल दिखाई देते हैं उसी प्रकार कूटस्थ आत्मा साक्षी रूप में यथावत् असंग अकर्ता अभोक्ता रहता है और अन्तःकरण रूपी सरोवर अथवा सरिता की वृत्ति वृत्ति रूप लहरों में चित् (चेतन आत्मा जो सर्वाकर्षक आनन्द-मयी सत्ता होने के कारण कृष्ण है) का आभास (प्रतिबिम्ब) अथवा चिदाभास चंचल होता है, और प्रमाता, संसारी या जीव रूप में कर्ता भोक्ता होकर दुःखी सुखी होता है। अन्तःकरण की उपाधि से उपहित होकर भी आत्मा का बिम्ब की भांति असंग रहना उसका साक्षी कूटस्थ रूप है और अन्तःकरण के विशेषण से विशिष्ट होकर सुख दुःखी कर्ता भोक्ता होना उसका प्रमाता या जीव रूप है। अन्तःकरण की वृत्तियां असंख्य हैं, नाम रूप को अपना कर चेतन श्रीकृष्ण की असंग सर्वाधिष्ठान रूपता का गोपन करने के कारण यही गोपी हैं। वृत्ति के उदय और लय होने के अन्तराल में (संधिक्षण) में निर्विकल्पक चैतन्य आत्मारूपी श्रीकृष्ण झलकता है। वृत्तियां रूपी गोपियां अनन्त हैं उनके उदय और विलय का क्रम अनन्त है इस क्रम के मध्यवर्ती अन्तराल अनन्त हैं उनमें निर्विकल्पक चैतन्य की झलक अनन्त है। यह अनन्तता ही मण्डलाकारता है। चिदाभास (चेतन का प्रतिफलन) के बिना वृत्तियां अप्रकाशित रहती हैं साभास वृत्तियों के बिना चेतन की चिद्रूपता की अभिव्यक्ति अथवा प्रकाशन नहीं होता। चिदाभास युक्त वृत्तियों और चेतन की अन्योन्य प्रकाश्य प्रकाशक रूपता ही गोपी गोपी और कृष्ण कृष्ण का अन्योऽन्यालिङ्गन है। एक दूसरे के हाथ से हाथ का पकड़ना अथवा परस्पर गलबहियाँ देकर मण्डलाकार नृत्य करना है, और इन वृत्ति वृत्तिरूपी गोपी गोपी के साथ क्रीड़ा करते कृष्ण कृष्ण के अनेक रूपों से असंग बिम्ब स्थानीय चेतन श्रीकृष्ण मण्डल के मध्य में स्थित है। यह बिम्ब स्थानीय असंग चेतना रास का प्रवर्तक है. अपने अनन्त रूपों द्वारा अपने में ही आरोपित, अतएव अपने से अभिन्न रसनीय रूपा सिद्धियों-गोपियों के साथ रास करता हुआ अपने बिम्ब रूप में यथावत् असंग है।

"अगनामंगनामन्तरे माधवो माधवं माधवं चान्तरेणा-ङ्गना इत्थमाकलिते मण्डले मध्यगः संजगौवेणुना गोपिका वल्लभः" गोपी गोपी के अन्तर में माधव और माधव माधव के अन्तर में गोपी, इस प्रकार बने मण्डल के मध्य में स्थित माधव रास का प्रवर्तक होकर भी असंग है।

(क्रमशः)

अध्यक्ष हिन्दी विभाग
ए. आर. एस. डी.
कालेज
नई दिल्ली

---

(१) श्रीमद्भागवत १०।३३।१७
(२) श्रीमद्भागवत १०।२६।४२ और १०।३३।२४
(३) ऐतरेय उपनिषद् १।३।१४

सुखस्थ चन्द्रमा !

रश्मिकान्त व्यास 'रश्मि'
ज्यो० शास्त्री, एम० ए०

ज्योतिष जगत में सूर्य के बाद सर्वाधिक प्रभावशाली चन्द्र माना गया है। विदेशी पाश्चात्य ज्योतिष में जो स्थान सूर्य राशि को प्राप्त है वही स्थान भारतीय ज्योतिष में चन्द्र राशि को प्राप्त है। चन्द्र का महत्व वेद काल से स्वीकृत हुआ है :—'चन्द्र मनसो जात० क्योंकि चन्द्रमा काल पुरुष का मन है। अत: दर्शन शास्त्र के अनुसार मनुष्य का उत्थान, पतन सब कुछ मन के ही अधीन हैं। 'मनएव मनुष्याणां कारणं बन्धयो क्षयो: (मन के हारे हार है, मन के जीते जीत) इसीलिए स्वेट मार्टेन आदि सभी महापुरुष मन को जीतने के लिए कहते हैं। चन्द्र के प्रत्यक्ष प्रभाव की महत्ता को वैज्ञानिकों ने भी स्वीकार किया है। उन्होंने स्वयं अपने अध्ययन से यह पाया कि मानसिक रोगी व्यक्ति पूर्णिमा के आसपास अधिक उत्पात मचाते पाये गये हैं जब दशमी तिथि तक अपेक्षाकृत कम। यह आज भी किसी मानसिक चिकित्सालय में, प्रत्येक व्यक्ति जो ज्योतिष और ग्रहों के प्रभाव को स्वीकार करता हो देख सकता है। इस का कारण वैज्ञानिकों ने यह बताया है कि मनुष्य के रक्त में समुद्र में पाये जाने वाले सभी तत्व उसी प्रतिशत के लगभग (कैल्सियम आदि) होते हैं अत: समुद्र की तरह रक्त में भी ज्वार भाटे आते हैं वे मानसिक रोगों में कमी या अधिकता लाते हैं।

चतुर्थ स्थान का चन्द्र पानी से संबन्धित व्यापार से व्यक्ति को लाभ देता है। व्यक्ति को शुभ चंद्र होने पर कृषि जमीन, जायदाद, मकान, वाहन, माता, ससुर, सुख अच्छा प्राप्त होता है और जातक गो, ब्राह्मण, देवादि में पूर्ण निष्ठा श्रद्धा भक्ति के साथ रहता है। जातक शीलवान सुखी, नए मकान, वाहन को शीघ्र प्राप्त करने वाला, यदि शीघ्र विवाह के योग हो तो २२ वर्ष में पुत्र संतान को प्राप्त करने वाला, पुण्यवान, उदार, उच्चपद पर स्थित, विद्वान, भाग्यवान्, मातृ पक्ष से लाभ, तथा माता के कारण भाग्योदय में मदद प्राप्त होती है। मातृभक्त, देवी उपासक जीवन का उत्तरार्ध अधिक सुखी होता है। कार, ट्रक, ट्रैक्टर, बस, हैलिकाप्टर, विमान आदि चन्द्र प्रबलता के अनुसार जातक को प्राप्त होते हैं। कारखाने, खदान आदि से जातक को अच्छा लाभ प्राप्त होता है। बली चन्द्र ससुराल पक्ष से पर्याप्त धन सम्पत्ति आदि को दिलाने वाला तथा विवाह के पूर्व सगाई के साथ ही भाग्योदय का कारण होता है।

अशुभ चन्द्र होने पर जातक परस्त्री गामी, बन्धु विरोधी तथा परिवार से कलह करके अलग रहने वाला, मलिन मन का, तथा बार-बार निजस्थान को बदलने वाला, दुकान, कारखाने में, शहर, प्रान्त, देश विदेश आदि में भटकने वाला, मानसिक रूप से हमेशा परेशान रहने वाला, मस्तिष्क रोगी, क्रोधी, तुनुक-मिजाज, अतिभावुक प्रकृति का होता है।

शुभ फल पुरुष राशि में अधिक प्राप्त होते हैं।

अग्निराशि (१।५।९) में अशुभ चन्द्र जातक को माता का सुख प्राप्त न होकर सदैव अन्तर्विरोध माता से

बनती है। जायदाद का सुख भी प्राप्त नहीं होता तथा स्वयं को अर्जित सम्पत्ति भी किसी कारण नष्ट हो जाती है।

पृथ्वी राशि (२।६।१०) तथा नीच (८) राशि का चन्द्र जातक को स्वयं की कोई अचल सम्पत्ति बनाने नहीं देता।

शेष जल राशि (४।१२) व तुला राशि में शुभ चंद्र शीघ्र ही पैतृक सम्पत्ति के लाभ के साथ उसे और अधिक बढ़ाने में सहायक सिद्ध होता है। अशुभ चन्द्र होने पर ३२ वर्ष की आयु तक सतत जीवन में संघर्ष तथा माता, पिता, सास, ससुर मित्रवर्ग से कष्ट तथा परेशानी होती है। माता, पिता, सास, ससुर अल्पायु भी देखे गये हैं। विवाह के बाद धीरे-धीरे प्रगति होती है जो ४० से ६० वर्ष की आयु में बहुत अच्छी स्थिति बनाने में सफल होते हैं, इन्हें मेडिशिन, स्त्रियों से सम्बन्धित वस्तु के व्यापार में लाभ प्राप्त हो सकता है।

चन्द्र सुख स्थान की अपेक्षा अन्य केन्द्र स्थान (१।१०) तथा त्रिकोण (६।५) एवं एकादश में विशेष शुभ फल देता है। अशुभ चन्द्र के सुख स्थान में होने पर उसकी दशा में जातक का धन परस्त्री को वश में करने के लिए व्यर्थ ही नष्ट होता है। माता तथा ससुर के भविष्य जानने के लिए चन्द्र को लग्न मानकर ग्रह योगों का विचार करना चाहिये। चन्द्र कहीं भी अकेला शुभ दृष्ट हो तो जातक में स्त्री के गुण कोमलता आदि विशेष देखने को प्राप्त होते हैं। श्रीमती लियो के अनुसार—चंद्रमा का प्रबल आकर्षक ज्वार भाटे व वनस्पति पर प्रभाव का कारण है। क्षार, तरल पदार्थ, समुद्र के ऊपर चन्द्र का आधिपत्य माना जाने से जो जातक शुभ चन्द्र के प्रभाव में हैं समुद्र तट पर निवास करने पर तथा सामुद्रिक व्यापार, जलज वस्तुओं के व्यापार से अच्छा धन लाभ करने में सफल होते हैं।

अशुभ चंद्र के फल का कम करने के लिए बच्चों को चांदी का चंद्र बड़ों को बिना छेद का मोती (बसरे का खदान का विशेष फलदायी) ४ रत्ती तक का चांदी में धारण करना सोमवार के दिन शुभ होता है। मोती की पिष्ठी या भस्म वैद्य सलाह से अथवा केलशियम टेबलट्स लेना उपयोगी होता है। काव्यत्व को देने वाला श्री चंद्र होता है। अशुभ चंद्र भी यदि साहित्यक क्षेत्र के योगों के साथ हो तो श्रेष्ठ आलोचक बना देता है। शीत विकार, सर्दी खांसी जलोदर स्मरणशक्ति संबन्धित विकार का कारण अशुभ चंद्र ही होता है। देवी या शंकर उपासना शीघ्र फलदायी होती हैं (पुरुष राशि में शिवोपासना) लोक कर्म बिभाग, कांच से संबन्धित कार्य, वेधशाला, सिंचाई तथा वाटर वर्क्स, नमक के कारखाने, आयात निर्यात, दूध, बनस्पति, वैद्यक (रसायन वैद्य) प्राणीशास्त्र चावल, कपास श्वेत वस्तुएं चंद्र के अधिकार में होती हैं। चंद्र के प्रभाव में अधिक रहनेवाला जातक इन्हीं से सम्बन्धित रहता है। शुभ होने पर इनके व्यापार से लाभ अन्यथा हानि होती है।

शुभ और सम राशि का चन्द्र गृहस्थी में व्यस्त, धन-संग्रह करने वाला, दयालु, उपकारी, सेवाभावी, काव्य-नाटक, उपन्यास का लेखक स्वभाव से विनोदी, व्यङ्ग करने वाले, कला प्रेमी, होते हैं।

विषम राशि में अशुभ होने पर स्वार्थी, विरक्त, कम मेहनत से अधिक धन पैदा करने की सोचने वाला, आलसी, चितातुर, चोर, व्यभिचारी, अत्याचारी, भ्रष्टाचारी, कपटी, चालाक, बदमाश, ठग, हत्यारा, नीच कर्म करने वाला होता देखा गया है। (शुभ होने पर नहीं)

चतुर्थ में चंद्र वाले प्रसिद्ध जातक

श्री जगजीवन राम (मेष) का; ऐनी बेसेन्ट (मिथुन) महाराजा कर्ण सिंह (वृश्चिक) के. एम. मुन्शी (मिथुन) श्री कमलापति त्रिपाठी (तुला) सर सी. डी. देशमुख (धन) अभिनेता दिलीप कुमार (मकर) गौतम बुद्ध (तुला) सरोजनी नायडू (वृश्चिक) विनोबा भावे (मकर) निर्देशक विजय भट्ट (वृषभ) श्री रमन (वृषभ) बगलोर, मैसूर महाप्रभु बल्लभाचार्य (कुम्भ) पंडिता रमा बाई (सिंह) महाकवि जयशंकर प्रसाद (वृषभ) आदि राशि का चंद्र उदाहरण के लिए देखा जा सकता है।

भारती भवन
उज्जैन (मध्य प्रदेश)

तत्त्व सिद्धान्त द्वारा जन्म समय शोधन

गौरीशंकर कपूर
बी-काम०, एल-एल० बी०

विधाता सृष्टि की रचना में एक विशेष नियम का पालन करते हैं। इस नियम के अनुसार पुरुष, स्त्री, पशु, पौधे सबका जन्म एक ऐसे क्षण भर होता है जब पंचतत्वों के किसी तत्व का क्रम चल रहा हो। इन पांच तत्वों की एक नियत समय की अवधि है और उसी अवधि के अनुसार उनका क्रम निश्चित किया गया है। इस क्रम का प्रथम दौर प्रत्येक दिन सूर्योदय से आरम्भ होता है। पहले दौर का प्रथम दौर घड़ी की चाल के अनुसार होता है और दूसरा आधा भाग विपरीत दिशा में। दौर का प्रथम भाग 'आरोह' कहलाता है और दूसरा भाग 'अवरोह'। दोनों को मिलाकर तत्वों का एक दौर पूर्ण होता है। आरोह दिशा के तत्वों का क्रम होता है पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश। अवरोह दिशा में विपरीत क्रम होता है—आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी। इनमें पृथ्वी तत्व ६ मिनट का होता है, जल १२ का, अग्नि १८ का, वायु २४ का और आकाश ३० मिनट का। इस प्रकार चौबीस घंटे के दिन में ८ पूरे दौर होते हैं और एक पूरा दौर ३ घंटे का होता है—१॥ घंटे आरोह और १॥ घंटे अवरोह। इन तत्वों में किसी तत्व की अवधि में पुरुष का जन्म होता है और किसी की अवधि में स्त्री का। और जैसा हम ऊपर कह चुके हैं कि तत्वों के क्रम का आरम्भ प्रत्येक दिन सूर्योदय से होता है परन्तु विभिन्न वारों को सूर्योदय के साथ विभिन्न तत्वों का आरम्भ होता है जो हम निम्नलिखित तालिका में दे रहे हैं।

आरोह क्रम से आरम्भ होने वाला प्रथम तत्व	वार	अवधि मिनटों में	पुरुष/स्त्री
पृथ्वी	बुधवार	६	पुरुष
जल	सोमवार, शुक्रवार	१२	स्त्री
अग्नि	रविवार, मंगलवार	१८	पुरुष
वायु	शनिवार	२४	स्त्री
आकाश	गुरुवार	३०	पुरुष

इस तालिका के अनुसार यदि मंगलवार या रविवार को तत्वों के क्रम का विचार करें तो हम देखेंगे कि सूर्योदय के पश्चात् आरोह क्रम में प्रथम तत्व अग्नि का होगा जो १८ मिनट तक रहेगा, उसके बाद २४ मिनट तक वायु, ३० मिनट तक आकाश, ६ मिनट तक पृथ्वी और १२ मिनट तक जल तत्व रहेगा। इस प्रकार एक दौर का आधा भाग पूरा होगा। दूसरा आधा भाग अवरोह क्रम का होगा जिसमें सबसे प्रथम १२ मिनट का जल तत्व होगा, ६ मिनट का पृथ्वी, ३० मिनट का आकाश, २४ मिनट का वायु और १८ मिनट का अग्नि तत्व होगा। इसके साथ ३ घंटे का प्रथम दौर समाप्त हो जायगा और फिर दूसरा क्रम अग्नि तत्व आरोह से आरम्भ होगा।

जन्म समय शोधन में इस तत्व सिद्धान्त का महत्व यह है कि हम इसके द्वारा यह परीक्षण कर सकते हैं किसी व्यक्ति की जन्म कुण्डली के या जन्म कुण्डली बनाने के लिये जो जन्म समय दिया गया है, वह शुद्ध है या नहीं। इस सिद्धान्त द्वारा जन्म समय का परीक्षण और

शोधन किस प्रकार किया जाता है, यह हम एक उदाहरण द्वारा समझाने का प्रयत्न करते हैं।

हमको कोई महोदय अपने पुत्र के लिये जन्म कुण्डली बनाने के लिये जन्म समयादि देते हैं—दिल्ली, सोमवार १२ फरवरी १९७३-११.१५ दोपहर से पूर्व। हमें यह देखना है कि यह जन्म समय शुद्ध है या नहीं—इसकी आवश्यकता इसलिये पड़ती है कि घर क्या अस्पताल तक में प्रायः जन्म समय ठीक नहीं लिखा जाता।

विश्व विजय पंचांग के अनुसार १२ फरवरी १९७३ सोमवार को दिल्ली में सूर्योदय हुआ था ७ बजकर ६ मिनट पर।

	घंटा	मि०
सोमवार सूर्योदय	७	६
आरोह क्रम—जल तत्व से पृथ्वी तत्व तक	१	३०
	८	३६
अवरोह क्रम—पृथ्वी तत्व से जल तत्व तक	१	३०
	१०	६
आरोह क्रम............जल		१२
	१०	१८
अग्नि		१८
	१०	३६
वायु		२४
	११	०
आकाश		३०
	११	३०

आकाश तत्व में पुरुष का जन्म होता है और क्योंकि दिया गया जन्म समय ११·१५ मिनट है जो आकाश तत्व के ११ बजे से ११·३० के बीच में पड़ता है। अतः हमको यह पुष्टि प्राप्त हो जाती है कि जन्म ११ और ११-३० के बीच में अवश्य हुआ है परन्तु इसके पूर्ण रूप से शोधन या पुष्टि के लिये हमें कुछ और सूक्ष्म परीक्षण करना पड़ेगा। इस सूक्ष्म परीक्षण के लिये हमें महादशा-अन्तर्दशा के समान तत्व के अन्तर्तत्व निकालने पड़ते हैं। इसके निकालने की प्रणाली वही है जो किसी महादशा में कोई अन्तर्दशा निकालने के काम में लाई जाती है। परन्तु यह ध्यान रहे कि पुरुष या स्त्री का ठीक जन्म समय वही होगा जब तत्व और अन्तर्तत्व दोनों क्रमशः पुरुष या स्त्री होंगे। इसके अतिरिक्त अन्तर्तत्व निकालने में इस बात का ध्यान रखना भी आवश्यक है कि प्रत्येक तत्व के दौर की अवधि ३ घंटा है और इसके ही अनुसार गणना करनी होगी।

ऊपर उदाहरण में हमने देखा था कि जन्म आरोह आकाश तत्व की अवधि में होने से ११ और ११.३० के बीच में अवश्य हुआ था। यदि हम उसको अन्तर्तत्वों द्वारा परीक्षण करें तो परिणाम इस प्रकार होगा—

आरोह आकाश तक (अवधि ३० मिनट) ११,०० बजे आरम्भ हुआ। आकाश तत्व के आरोह और अवरोह अन्तर्तत्व की ३० मिनट की अवधि के होंगे। गणना से वे इस प्रकार निकलेंगे—

आरोह अन्तर्तत्वों की अवधि		१५ मिनट
अवारोह अन्तर्तत्वों की अवधि		१५ मिनट
कुल		३० मिनट

		घं०	मिनट
आकाश तत्व का आरम्भ		११	००
आरोह अन्तर्तत्व आकाश		००	०५
		११	०५
	पृथ्वी	००	०१
		११	०६
	जल	००	०२
		११	०८
	अग्नि	००	०३
		११	११
	वायु	००	०४
		११	१५
अवरोह तत्व	वायु	००	०४
		११	१९

ऊपर दी हुई गणना के अनुसार ११.१५ का समय आरोह वायु अन्तर्तत्व की समाप्ति और अवरोह वायु अन्तर्तत्व के आरम्भ पर पड़ता है। वायु तत्व या अन्तर्तत्व में स्त्री का जन्म होगा। अतः ११.१५ जन्म समय शुद्ध नहीं है। शुद्ध जन्म समय वह होगा जिसमें तत्व और अन्तर्तत्व दोनों पुरुष हैं। यह समय दिये हुये जन्म समय के निकटतम होना चाहिये और वह आता है ११.१० मिनट जब आरोह आकाशतत्व में आरोह अग्नि अन्तर्तत्व चल रहा था। यह ११.१० ही तत्व सिद्धान्त के अनुसार का शोधित या शुद्ध जन्म समय माना जायेगा।

हमने अपने अनुभव के इस सिद्धान्त को बहुत लाभदायक पाया है और हमारा अनुरोध है कि विद्वान पाठक इसका परीक्षण करके अपने अनुभव प्रकाश में लायें।

ए. २/११५ सफदरजंग इन्क्लेव, नई दिल्ली-१६

भारतीय दर्शन एवं ज्योतिष में '९' की संख्या

आचार्य भास्करानन्द लोहनी

भारतीय दर्शन और गणित में ९ के अंक का विशेष महत्व है साथ ही चमत्कारिक भी। गणित में यह सबसे बड़ी संख्या है क्योंकि ९ से आगे जितनी संख्याएं बनती हैं वे सब या तो शून्य के संयोग से बनती हैं अथवा परस्पर दो अंकों के योग से। अतः ९ की संख्या अंकशास्त्र की परम सीमा है। इसलिए इस संख्या को "सृष्टि" का स्वरूप भी मान लिया गया है अर्थात इस संख्या से परे कुछ नहीं।

अब देखिए ९ की संख्या का चमत्कार। इसका पहाड़ा पढ़िए, इसकी मूलसंख्या प्रत्येक में विद्यमान है—

९ गुणा १=९
९ गुणा २ =१८ अर्थात् १ धन ८=९
२७=२ धन ७=९
३६=३ धन ६=९
४५=४ „ ५=९
५४=५ „ ४=९
६३=६ „ ३=९
७२=७ „ २=९
८१=८ „ १=९
९०=९ „ ०=९

उल्लेखनीय है कि जगत अर्थात् सृष्टि सदैव विद्यमान रहती है, प्रलय के बाद भी उसका स्वरूप बदल जाता है, नाश नहीं होता। सृष्टि के भांति ही ९ की संख्या अविनाशी है, इसी हेतु गोस्वामी तुलसीदास जी ने नौ की संख्या को सृष्टि का रूप माना है और कहा है कि जैसे प्रत्येक परिस्थिति में ९ का मूल अंक अविनाशी रहता है इसी प्रकार जो परमात्मा राम का आश्रय ले लेता है उसका विषय परिस्थितियों में भी अधः पतन नहीं होता—

राम चरण अवलम्ब गहु, छांडि सकल उपचार।
जैसे घटत न अंक नव, नव के लिखत पहार॥

उल्लेखनीय है कि भगवान राम के जन्म के समय भी (नौमी) तिथि थी।

भारतीय गणित में सबसे बड़ी संख्या १८ अंकों की है, यह संख्याएं इस प्रकार हैं—

एक, दस, शत, सहस्त्र, दससहस्त्र, लक्ष, दसलक्ष, कोटि, दस कोटि, अब्ज, दस अब्ज, निखर्व, दस निखर्व, शंकु, दसशंकु, अन्त्य, दस अन्त्य, और परार्ध।

यहां यह भी उल्लेख कर देना आवश्यक होगा कि ये संख्याएं भारतीय हैं, विश्व के किसी भी भाषा में गणित की १८ संख्यायें नहीं हैं। इसी आधार पर प्रसिद्ध इतिहासज्ञ एवं विद्वान अल्बेरुनी ने लिखा है कि गणित का आदि देश भारत है जहां बाईं ओर १८वें स्थान तक की संख्याएं मिलती हैं।

१८ के दो अंकों का योग भी १ धन ८=९ ही होता है।

आध्यात्मिक रहस्य

क्योंकि ९ का अंक सृष्टि का प्रतीक है इसलिए उसका आध्यात्मिक दृष्टि से भी महत्व है। गीता में,

(अध्याय ७ श्लोक ४/५ में), स्वयं भगवान ने बतलाया है कि मेरी दो प्रकृतियाँ हैं अर्थात् यह समस्त सृष्टि मूलतः दो तत्वों में विभाजित है—

(१) अपरा अर्थात् जड़ जो पृथ्वी, जल, अग्नि वायु, आकाश, मन, बुद्धि और अहंकार इन आठ तत्वों में विभाजित है।

(२) परा-प्राणवायु रूप चेतन तत्व।

अतः दर्शनशास्त्र के मत से यह समस्त सृष्टि अपरा प्रकृति के ८ तथा प्रकृति के कुल ९ तत्वों से बनी है, इन ९ तत्वों के अलावा इस सृष्टि में और कुछ नहीं है।

भूमि रापोऽनलो वायुः खं मनो बुद्धिरे वच।
अहंकार इतीयं मे भिन्ना प्रकृति रष्टधा॥
अपरेयमितस्त्वन्यां प्रकृतिं विद्धि मे पराम्।
जीवभूतां महाबाहो ययेदं धार्यते जगत्॥

इस सिद्धान्त से चेतन और जड़ प्रकृति से उत्पन्न होने के कारण मनुष्यों तथा प्राणियों की प्रतीक संख्या १८ हुई। इसलिये प्राणियों के कल्याणार्थ एवं प्राणियों के सांसारिक हित के शास्त्रों से १८ का घनिष्ट सम्बन्ध है, जैसे—१८ पुराण, १८ उपपुराण, १८ स्मृतियां, गीता के १८ अध्याय, महाभारत के १८ पर्व इत्यादि।

आपको विदित होगा कि सिद्ध महात्माओं, सन्तों के आगे १०८ की पवित्र संख्या लिखी जाती है, माला में १०८ दाने होते हैं, आध्यात्मिक ज्ञान के ग्रन्थ उपनिषदों की संख्या भी १०८ है, इस पर भी विचार करो। यों तो १०८ की संख्या का मूल भी १ + ० · ८ = ९ ही होता है। इसके अलावा १ प्रतीक है चेतन प्रकृति का और ८ है जड़ प्रकृति का, मध्य में बिन्दु इस बात का प्रतीक है कि १ रूपी चेतन प्रकृति ने मायारूपी ८ जड़ प्रकृतियों पर विजय प्राप्त कर सिद्धि प्राप्त कर ली है। अथवा ऐसा प्राणी, ऐसा ज्ञान, जो ८ तत्वों वाली माया नामक अपरा प्रकृति से मुक्त है। भगवान को प्राप्त करने की भक्ति भी ९ प्रकार की है।

देवताओं की निधियां भी ९ ही हैं।

ज्योतिष में

ज्योतिष तो गणित से ही सम्बन्धित शास्त्र है। अतः वह भी ९ के प्रभाव से अछूता नहीं है—नव ग्रह तो प्रसिद्ध हैं ही, इसके अलावा—

२७ नक्षत्र = २ + ७ अर्थात् ९
२७ नक्षत्रों के ४ चरण = २७ × ४ = १०८ अर्थात ९
२७ योग = २ · ७ अर्थात् ९
वर्ष भर में ३६० तिथियां = ३ + ६ + ० = ९
१२ राशि × ९ ग्रह = १०८ अर्थात् ९

तंत्र शास्त्र में

मंत्र एवं तंत्र शास्त्र में ९ को विशेष महत्व प्राप्त है, तंत्र शास्त्र में जो यंत्र बनाये जाते हैं उनके ९ कोष्ठक होते हैं।

इसी प्रकार मंत्रशास्त्र और तंत्र में जो उपासना तथा अनुष्ठान के लिये सिद्ध यंत्र होते हैं, उनके शब्दों की मूल संख्या ९ होती है। शिव महा पुराण में प्रत्येक स्वर और व्यंजनों की संख्या दी गई है, जिसके अनुसार कुछ प्रमुख सिद्ध मंत्रों की मूल संख्या इस प्रकार होती है।

अ—राधिकाकृष्ण = योग १०८ = ९
आ—नमः शिवाय = योग १३५ = ९
इ—सीताराम = योग १०८ = ९
ई—गायत्रीमंत्र = योग १०४४ = ९
नवार्णमंत्र को तो जन-जन जानता है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि ९ का अंक हमें सृष्टि का बोध कराता है, क्योंकि समस्त सृष्टि ९ में निहित है इसलिये ९ से आगे कोई अंक भी नहीं है।

निदेशक—अखिल भारतीय ज्योतिर्विज्ञान तथा
सांस्कृतिक शोध परिषद,
४० कैसरबाग, लखनऊ—१

आकस्मिक दुर्घटनाएं और ग्रहयोग स्थितियां

● दुर्गादत्त शर्मा

आज के इस यांत्रिक युग के विकास के साथ-साथ आकस्मिक दुर्घटनाओंकी संख्या में दिनोंदिन वृद्धि चिंताकारक है। समाचार पत्रों में नित्यप्रति इस प्रकार की दुर्घटनाओं के समाचार पढ़ने को मिलते रहते हैं। ज्योतिष की दृष्टि से इसके लिए निश्चित ही कुछ ग्रहस्थितियां उत्तरदायी होती हैं। किंतु ऐसे ग्रहयोग देखने से पूर्व, व्यक्तिगत जन्मकुण्डलियों में इस प्रकार की दुर्घटनाओं की संभावना पर विचार किया जाना अत्यावश्यक है।

इसके लिए सर्वप्रथम लग्न, लग्नाधिपति, चन्द्रमा तथा सूर्य की स्थिति का अध्ययन करना आवश्यक है। यदि यह चारों पापग्रहों से दृष्टियुक्त हों अथवा पापग्रहों के मध्य में हों तथा कोई शुभ सम्बन्ध नहीं बनता हो तभी दुर्घटना संभव है। इसके अतिरिक्त मंगल, शनि एवं राहु की स्थिति ही अनायास दुर्घटनाओं तथा एतत् कारणात् मृत्यु के संबंध में अधिक महत्वपूर्ण होती हैं।

आकस्मिक दुर्घटना प्रायः चार प्रकार की होती हैं—

(१) जल में डूबने से

(२) किन्हीं मशीनों के कारण अथवा आग से।

(३) विष, अथवा विषैले जन्तुओं द्वारा काटे जाने पर।

(४) यात्रा में अथबा किसी बाहन से।

उक्त चारों प्रकार की दुर्घटनाओं के लिए प्रायः जो ग्रहयोग संभव होते हैं बे निम्न प्रकार से हैं—

१-जल के कारण

(१) यदि अष्टम भाव में चन्द्रमा हो और शनि तथा मंगल से दृष्ट हो। ३२वें वर्ष में दुर्घटना संभव है।

(२) यदि चन्द्रमा व्यय भाव में हो तो ४५वें वर्ष में दुर्घटना संभव है।

(३) यदि मंगल नीच राशि में अष्टम भाव में हो।

(४) यदि शनि, चन्द्रमा एवं मंगल चतुर्थ, सप्तम एवं दशम भाव में हो।

(५) यदि नेपच्यून लग्न अथवा अष्टम भाव में हो।

(६) अष्टम भाव में मीन राशि हो तथा दो पापग्रहों से दृष्ट हो।

(७) यदि लग्न पर चन्द्रमा हो तो जातक पानी से बहुत भयभीत रहता है।

उपरोक्त स्थितियों का महत्व तभी अधिक होता है जब यह स्थिति जलतत्वात्मक राशियों में-कर्क, वृश्चिक अथवा मीन में हो। चन्द्रमा एवं नेपच्यून दोनों ही जलतत्वात्मक ग्रह हैं और इनकी स्थिति एतदर्थ अधिक विचारणीय होती है।

२-यांत्रिकी अथवा अग्नि दुर्घटना

(१) यदि मंगल प्रथम भाव में हो तो अग्नि से अथवा अस्त्रशस्त्र से भय।

(२) चतुर्थ भाव में मंगल जातक के मकान में अग्नि भय।

(३) यदि पापवीक्षित नीच मंगल छठे भाव में हो तो युद्ध अथवा अग्नि से दुर्घटना संभव।

(४) यदि मंगल सप्तम भाव में हो तो १७वें वर्ष में अग्नि दुर्घटना संभव।

(५) दशम भावस्थ मंगल अथवा शनि २६ अथवा २८वें वर्ष में शस्त्र भय।

(६) शुक्र छठे भाव में ४१वें वर्ष में शस्त्रभयकारक

(७) षष्ठस्थ हर्षल अथवा लग्नस्थ केतु ऊपर से गिरने का भय।

(८) पंचम भावस्थ अशुभ अथवा नीचराशिस्थ शनि हो।

(९) अग्नितत्वात्मक राशियों में तथा लग्न, षष्ठ, सप्तम, अष्ठम अथवा व्यय भावस्थ हर्षल से यांत्रिक भय

(१०) द्वितीय भावस्थ मंगल पत्नी को अग्नि से भय कारक।

(११) लग्नस्थ मंगल एवं शनि यांत्रिक दुर्घटना सम्भव।

(१२) यदि लग्न दो पापग्रहों विशेषकर शनि एवं राहु के मध्य में हो तो शस्त्रभय।

(१३) सूर्य एवं मंगल दशम एवं चतुर्थ भाव में हों।

(१४) लग्नस्थ मंगल यदि शनि एवं सूर्य से दृष्ट हो।

(१५) द्वितीयेश मंगल एवं शनि से पीड़ित हो या युत हों तो नेत्रों पर चोट संभव।

उक्त प्रकार की आकस्मिक दुर्घटनाओं में सूर्य, मंगल एवं हर्षल तथा अग्नितत्वात्मक-मेष, सिंह एवं धनु राशियों का अधिक महत्व होने से विचारणीय होती हैं।

३-विष अथवा विषैले जानवरों से भयकारक योग

(१) कन्या राशिगत सूर्य एवं चन्द्रमा यदि पापग्रहों से युत वा दृष्ट हो।

(२) लग्नाधिपति यदि राहु के साथ पापदृष्टि वा युत हो।

(३) चतुर्थेश एवं षष्ठेश का परस्पर परिवर्तन योग हो

(४) राहु यदि चतुर्थ षष्ठ अथवा अष्टम भाव में हो

(५) यदि लग्न एवं समस्त ग्रह राहु एवं केतु के मध्य स्थित हों।

(६) चतुर्थ भाव में पापदृष्ट केतु हो।

(७) पापपीड़ित नेपच्यून लग्न, षष्ठ अथवा अष्टम भाव में।

(८) तृतीयेश राहु के साथ हो,

(९) दुर्बल अथवा नीच राशि का मंगल अथवा शनि अष्टम भाव में हो।

(१०) धनु का द्वितीय द्रेष्काण पापपीड़ित होने पर विष अथवा बंदूक से।

इस सम्बन्ध में राहुकेतु एवं नेपच्यून की स्थिति अत्यंत महत्वपूर्ण एवं विचारणीय होती है।

४-यात्रा में अथवा वाहन से

यात्रा सम्बन्धी दुर्घटना पर विभिन्न ग्रहस्थितियों पर विचार करने से पूर्व यह देखना आवश्यक है कि वाहन कारक अथवा यात्रा कारक भावों की स्थिति कैसी है। यदि ये भाव वा भावेश दुर्बल, पापपीड़ित हों तो अन्य ग्रह योग निम्न प्रकार सम्भव हैं—

(१) दुर्बल पीड़ित मंगल एवं हर्षल तृतीय अथवा नवम भाव में हों।

(२) नवम भावस्थ दुर्बल पीड़ित नेपच्यून से समुद्र-यात्रा में।

(३) नवम भावस्थ शनि समुद्रयात्रा समय समुद्रीरोग कारक संभव है।

(४) पापग्रह तृतीयेश होकर सप्तम भावस्थ हो।

(५) दुर्बल पीड़ित नीचराशि का शनि व्ययभावस्थ हो।

(६) अग्नि तत्वात्मक राशियों में चतुर्थ भाव में दुर्बल पीड़ित सूर्य, मंगल अथवा हर्षल हो।

(७) पापयुत वा दृष्ट केतु अष्टम अथवा दशम भाव में हो।

(८) शनि चन्द्रमा एवं मंगल द्वितीय चतुर्थ अथवा दशम भाव में हो तो किसी वाहन से गिरने के कारण।

उपरोक्त ग्रहस्थितियों का अध्ययन करते समय शुभ एवं अशुभ सम्बन्धों का तुलनात्मक रूप से विचार करना अत्यंत अनिवार्य है।

ए-७२—जनता कालोनी, जयपुर

पत्नी त्यक्ता योग

● राधाकृष्ण शर्मा

यह बात सत्य और कटु सत्य है कि विज्ञान का ज्यों-ज्यों विकास होता जा रहा है त्यों-त्यों पारस्परिक संबन्धों के मध्य दरार भी गहरी से गहरी होती जा रही है। आज कुटुम्ब टूट रहे हैं, सम्बन्ध बिगड़ रहे हैं और आये दिन न्यायालयों की छत तले पति-पत्नी तक को तलाकार्थ कागज लिए खड़े देखते हैं। मैं इस लघु लेख में स्पष्ट करने का प्रयास करूंगा कि ग्रहों की वह कौन-सी स्थिति है जिससे कि वियोग या एक को त्यक्त होना पड़ता है :—

जन्म समय इस जातिका की ग्रह स्थिति यों थी :—

ल	पञ्चमभाव	नवमभाव	एकादश भाव	द्वादश
धनु-मंगल	मेष-राहु	सिंह-शनि	तुला-शुक्र	सूर्य-बुध
गुरु			केतु	वृश्चिक
चंद्र				

इष्ट ३।४२।३० सूर्य ७।१६।४३।५७ चंद्र ८।३।२४।४ तथा लग्न ८।५।५६।४५ संवत २००५ मार्गशीर्ष शुक्ला[२] गुरुवार तदनुसार[२] दिसम्बर १९४८.

किसी भी जातक की कुण्डली को देखने के लिए लग्न सूर्य लग्न, चन्द्र-लग्न, विषय-वस्तु से संबन्धित घर, ग्रह-पारस्परिक दृष्टि आदि को देखना चाहिये।

जातक स्त्री को पति लम्बे समय से छोड़ चुका है तथा जातक स्त्री स्वयं जीविकोपार्जन करने के लिए शासकीय सेवा में है।

लग्न पर दृष्टिपात करें तो हम देखेंगे कि लग्न एवं चंद्र लग्न एक ही है। लग्नेश लग्न में है। सामान्यतः यह जातक उत्तम जीवन यापन करने वाली होनी चाहिये पर ऐसा है नहीं। क्यों? हम देखते हैं जातिका मंगली है अर्थात महा क्रूर भौम की पूर्ण दृष्टि सप्तम भाव अर्थात पति भाव पर है जिससे निश्चय ही पति सुख में न्यूनता आई। पुनः सप्तमेश भी दुःस्थान में अर्थात् द्वादश भाव में भाग्येश सूर्य के साथ होकर भाग्यहीनता का दोष उत्पन्न करता है। लग्नस्थ मंगल की दृष्टि सुख भाव अर्थात चतुर्थ भाव पर है जो कतई उचित नहीं है। लग्न में चंद्र मंगल की युति भी जातक के लिए घातक है। कारण चंद्र अष्टमेश होकर अष्टम से षष्ट है जिस पर लग्नस्थ भौम की विशेष अष्टम दृष्टि है। मंगल जहां एक ओर द्वादशेश है वहां द्वादश से द्वितीय भी मारक है और लग्न से पञ्चम सन्तान-भाव में राहु मंगल राशि में स्थित हो कर सन्तान पक्ष कमजोर कर रहा है। राहु संपूर्ण दृष्टि से लग्न को देख रहा है। वहां एकादश भाव पर जहां सप्तम कारक शुक्र स्वगृही है, दृष्टि डाल रहा है। धनु लग्न की कुण्डली में यों भी मंगल प्रबल कारक ग्रह तथा शुक्र एवं शनि व बुध अकारक होकर सुखपति को बलहीन बना देता है। चन्द्र व गुरु अर्थात लग्नेश-सुखेश तटस्थ रह कर भी सुख में, सन्तान में बाधक ही है। इस प्रकार सुख-भाव, पति-भाव, एकादश, लग्न, लग्नेश, कमजोर हो जाते हैं।

आइये अब हम दृष्टि पर विचार करें। लग्न पर क्रूर शनि दो पात दृष्टि लग्न पर डाल रहा है। शुक्र एक पात दृष्टि लग्न पर, राहु पूर्ण दृष्टि लग्न पर डालता हैं। जो उचित फलदायी नहीं है। सूर्य-बुध की दृष्टि षष्ट-भाव पर है। (शेष पृष्ठ २० पर)

मृत्यु के कारण ?

● श्यामसुन्दर शर्मा

योगशास्त्र के आचार्यों ने योगाभ्यास द्वारा जहां मृत्यु पर अधिकार पाने की विविध उपायों और क्रियाओं की खोज की है वहां उन्होंने मानव को अपना मृत्यु समय जान लेने की सूचना विधियों का भी वर्णन किया है। मृत्यु काल का ज्ञान हो जाने पर भी आप मृत्यु को धकेल सकते हैं। निराश होकर मृत्यु की प्रतिज्ञा करना कायरों का काम है। मृत्यु के कारणों को जानकर एक वीर योद्धा की भांति जो मृत्यु से लोहा लेता है वही सच्चा महारथी है।

वेद कहता है कि:—

सम्भूतिच विनाशंच यस्तद्वेदो मयंसह।
विनाशेन मृत्युंतीत्वा सम्भूत्या मृतमश्नुते ॥

अब हम मृत्यु का समय जानने की कतिपय विधियों और उपायों का वर्णन करते हैं।

यदि अपनी जीभ (जिह्वा) का अग्रभाग दिखना बन्द हो जाय तो केवल चौबीस घण्टे ही जीवन शेष समझना चाहिए। नाक का अग्रभाग न देखा जा सके तो तीन दिन का जीवन शेष समझना चाहिए।

जिसके श्वांस की हुंकार ठण्डी और फूत्कार गर्म हो तो उसकी मृत्यु अनिवार्य है। जो ध्रुव, नक्षत्र, आकाश गंगा, चन्द्रमा, शुक्र आदि तारकों को प्रयत्न करने पर भी नहीं देख सकता वह निश्चय ही मृत्यु को प्राप्त होता है।

कांसे के एक स्वच्छ चौड़े पात्र में निर्मल जल भरकर उसमें सूर्य का प्रतिबिम्ब देखिए। यदि जल में सूर्य बिम्ब दक्षिण दिशा की ओर खण्डित दीख पड़े तो दर्शक की मृत्यु ६ महीने में होगी। पश्चिम दिशा की ओर बिम्ब टूटा दिखाई पड़े तो तीन माह में, पूर्व दिशा में दीख पड़े तो एक महीने में मृत्यु हो जायेगी। सूर्य बिम्ब के बीच छेद दिखाई पड़े तो १० दिन में और बिम्ब यदि धुंये से आच्छादित दिखाई दे तो उसी दिन अर्थात चौबीस घन्टों में ही उसकी मृत्यु हो जायेगी।

जिसे सूर्य बिम्ब से आभासित किरणें और इसी प्रकार चन्द्र की किरणें दिखाई न पड़ें तथा अग्नि का तेज फीका जान पड़े तो वह व्यक्ति अपने जीवन को ११ महीने तक ही जैसे-तैसे निकाल सकेगा। जिसके हाथों तर्जनी, मध्यमा और अनामिका अंगुलियां झुकाई न जा सकें और जिसका कण्ठ बिना किसी रोग के सूख रहा हो ऐसा व्यक्ति ६माह में मर जाता है।

मैथुन करते समय, मैथुन के आदि, मध्य और अन्त में जिसे हिचकियां आवें वह पांच महीने से अधिक जीवित नहीं रहेगा। जिस व्यक्ति की आंखों का तेज नष्ट होकर आंखों में दर्द हो, वह चार माह तक जीवित रह सकता है। जिसके अण्डकोष और दांत दबाने से उसमें पीड़ा या वेदना न हो उसका जीवन केवल ३ महीने का ही मानना चाहिए अथवा स्नान के समय जिसकी छाती, सिर और पैरों का पानी तुरन्त सूख जाये वह भी ३ माह ही जीवित रहेगा।

जो रोगी व्यक्ति अपनी छाया को अधोमुखी रूप में देखे तथा छाया को दो हिस्सों में विभक्त देखे तो उसकी दो दिन में मृत्यु हो जाती है, ऐसा श्रेष्ठ मुनियों का कथन है।

यदि कोई व्यक्ति दर्पण में अपने या अन्य व्यक्ति के दांतों को काला, पीला रंग का देखे तो उसकी मृत्यु निकट समझनी चाहिए। अपनी आखों से भृकुटी के बालों को जिस दिन मनुष्य नहीं देख सके उसके ९वें दिन वह मर जायेगा अथवा उसके ९ दिन के भीतर उसका मरण होगा। जिसे दीपक की लौ (दीप शिखा) कभी तप्तस्वर्ण के समान दिखाई दे और कभी काले रंग की दिखाई दे वह मनुष्य नौ महीने ही जीवित रहेगा।

मृत्यु के कारणों को जानकर उन्हें हटाया भी जा सकता है। इसी प्रकार मृत्यु का समय अति दूर होने पर भी आहार विहार के विपरीताचरण से मृत्यु को असमय आमंत्रित भी किया जा सकता है।

पता : द्वारा—महाबीर प्रसाद शर्मा
श्रीनिवास हाउस, हजारीमल सोमानी
बम्बई—१

पत्नी त्यक्ता योग

(पृष्ठ १८ का शेष)

सूर्य लग्न से देखें तो सप्तम भाव पर क्रूर सूर्य की दृष्टि एवं सप्तमेश द्वादशेश हैं। मंगल की क्रूर दृष्टि अष्टम भाव पर एवं नीच राशि पर अर्थात भाग्य भवन पर नीच दृष्टि है साथ ही भाग्येश चंद्र की युति भी अनुचित फल देती है। ऐश्वर्य स्वामी द्वादशेश है। शुक्र वृश्चिक लग्न में अकारक है, मंगल एवं शनि तटस्थ रह गये। लग्न व लग्नेश पर कोई शुभ दृष्टि भी नहीं है।

यों हम स्पष्ट देख रहे हैं कि जातक स्त्री को पति छोड़ चुका है तथा घोर अशांत वातावरण में जातक स्त्री जीवन जी रही है। यों भी धनु राशि जहाँ अग्नि तत्व है वहां मिथुन वायु तत्व है। वायु आग को बढ़ावा ही देगी।

कुछ अन्य ज्ञातव्य बातें—सप्तम मिथुन राशि स्वसुर ग्रह को निर्बल व मध्यम वर्गीय बनाता है। पति लंपट-धूर्त एवं व्याभिचारी हुआ करता है।

इस कुण्डली में एक योग दरिद्र योग भी है अर्थात लग्न में पापी ग्रह का होना एवं अन्य केन्द्र स्थानों ४।७।१० में किसी ग्रह का न होना उसे हीनता देता है तथा सुख में न्यूनता लाता है।

ध्रुव, सप्तर्षि मण्डल और अनन्तनाग के तारे

● ज्योतिषाचार्य श्री बलराम शास्त्री
एम० ए०, साहित्यरत्न

विष्णुलोक यहां से कितना दूरस्थ है और 'विष्णुलोक' क्या यहां से दृश्य है ? ये दोनों प्रश्न उत्तर की उपेक्षा अवश्य रखते हैं, किन्तु उत्तर सरल नहीं है। अभी तक हमारे वैज्ञानिक 'यमलोक' का ठीक-ठीक पता लगा सके हैं। यमलोक के साथ ही आधुनिक वैज्ञानिकों को 'वरुण लोक' और 'इन्द्रलोक' का भी पहले ही पता लग गया था। वरुणलोक, इन्द्रलोक और यमलोक के प्रतीक स्वरूप तीन ग्रहों या तारों की पहचान अब साधारण दूरदर्शक यन्त्रों से भी सम्भव हो गई है। पाश्चात्य वैज्ञानिकों ने इन तीनों के प्रतीक तीन ग्रहों के नाम अपनी भाषा में बतलाये हैं। यूरेनस (वरुण), नेपच्यून (इन्द्र), प्लूटो (यम) की जानकारी प्राप्त हो जाने पर ग्रहविषयक या ब्रह्माण्डविषयक जानकारी की इति श्री तो होती नहीं। वैज्ञानिक चन्द्रमा पर मानव को पहुंचाकर अन्य ग्रहों पर मानव की यात्रा कराने की तैयारी में जुटे हैं। वैज्ञानिक जो कुछ कर रहे हैं और जो कुछ करना चाहते हैं, इस पर यहां कुछ कहना या लिखना युक्तियुक्त नहीं है। यहां पर यह लिखना आवश्यक है कि क्या हमारे पुराण ग्रन्थों और ज्योतिष विज्ञान के ग्रन्थों में जो कुछ लिखा गया है, वह सत्य है ? या कल्पना के आधार पर है ? इस तथ्य के ऊपर विचार करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि हमारे आचार्यों ने जिन लोकों की चर्चा की है, वह साधार है। प्रमाणिक भी है। चन्द्रमा ग्रह चन्द्रलोक है। सूर्य ग्रह सूर्यलोक है। उसी प्रकार पंच ताराग्रह बुध, शुक्र, मंगल, गुरु और शनि भी एक-एक लोक हैं। अब वरुणलोक, इन्द्रलोक और यमलोक का भी पता चल गया। सन् १९३० में यमलोक का परिज्ञान आधुनिक जगत् को हुआ।

यमलोक या विष्णुलोक से सम्बन्ध

यमलोक के प्रतीक (प्लूटो) की पहचान हो जाने पर पुराण ग्रन्थों में वर्णित यमलोक के ऊपर दो शब्द लिखना अनिवार्य हो गया। पुराणों के आधार पर यम-लोक का बृहद् परिज्ञान होता है। यमलोक का दर्शन हमारे वैज्ञानिक आधुनिक साधनों से कर सकेंगे या नहीं, यह पृथक विषय है। कठोपनिषद् में उद्दालक के पुत्र नचिकेता के यमलोक जाने और वापस आने की चर्चा है। प्रत्यक्ष प्रमाण के आधार पर आधुनिक वैज्ञानिक यमलोक जाकर पुनः वापस आ सकेंगे या नहीं, इसे भविष्य बतलायेगा, मैं यहां पर कुछ घटनाओं का उल्लेख करना चाहता हूं। 'कल्याण' जैसे मासिक पत्रों में एवं यदा-कदा अन्य समाचार पत्रों में भी किसी व्यक्ति के मरने और उसके पुनर्जीवित होने की चर्चा मैंने कई बार पढ़ी थी। मुझे ऐसे दो व्यक्तियों से सम्पर्क करके उनके मुख से ही आपबीती सुनने का अवसर मिला। फर्रुखाबाद जनपद की ही दो रहस्यमय चर्चाएँ हैं। फर्रुखाबाद के प्रख्यात स्थल संकिसा के पास अद्दरोदें गांव का पुत्तूकाछी सन् १९५९ में आश्विन में मर गया और कुछ देर बाद पुनर्जीवित हो

गया। उसने आपबीती में बताया—मुझे चार काले कलूटे व्यक्ति पकड़कर ले गये। वे मुझे ऊपर ले चले। मैं उनके साथ खिचता चला गया। जहाँ मुझे पहुंचाया गया वह स्थान बहुत ही दिव्य था। फाटक की विशालता और सुन्दरता मनमोहक थी। एक महात्मा आये। एक बड़ी पुस्तक देखकर उन चारों दूतों से बोले—यह नहीं, वह दूसरा 'पोहम' है। मुझे वहां से ढकेला गया और मैं यहाँ चला आया। बाद में वहीं का पोहम नामक बालक तुरन्त मर गया। गांव वालों ने इस तथ्य को प्रमाणित किया। दूसरी घटना सन् १९७१ की है। फर्रुखाबाद के पास ही एक गांव अत्तरांबागपुर है। २५ मार्च को गयादीन नामक एक किसान मर गया। उसके अन्तिम संस्कार की पूरी तैयारी हो गई। कुछ घण्टे बाद वह पुनर्जीवित हो गया। उसने आपबीती में बताया कि मुझे दो व्यक्ति पकड़कर ले गये। मुझे एक सुन्दर फाटक के पास पहुंचाया गया। थोड़ी देर में एक दाढ़ीवाले बाबा आए और एक पुस्तक देखकर कहा—यह नहीं, वह गयादीन चमार है। (उस समय गयादीन चमार अपनी भैंस को पानी पिला रहा था।) थोड़ी देर में मुझे वहां से यहां भेजा गया। मुझे एक लोहे की छड़ से मारा भी गया। गयादीन किसान के जीते ही उसी दिन गयादीन चमार अचानक मर गया। इसकी जांच करने पर गयादीन किसान के पुनर्जीवित और गयादीन चमार के अचानक मर जाने की बात सत्य साबित हुई।

उपरोक्त दोनों घटनाओं की जांच मैंने स्वयं की है। अतः इनका संक्षिप्त उल्लेख यहां कर दिया। मेरा इतना निवेदन है कि पुराण ग्रन्थों में यमलोक की जो चर्चा है वह काल्पनिक नहीं है। आधुनिक वैज्ञानिक जब तक यमलोक (प्लूटो) के ऊपर पहुंचकर पुनः वापस आकर सप्रमाण कुछ नहीं बतलाते तबतक पौराणिक यमलोक के विषय में असत्यता की बात करना भूल होगी। यमलोक है और अवश्य है। क्या प्लूटो नामक ग्रह ही यमलोक का प्रतीक है, यह भी नहीं कहा जा सकता। हां, कुछ आकारों पर यूरेनस, नेपच्यून और प्लूटो नामक तारों को, वरुण, इन्द्र और यम की ही संज्ञा दी जा रही है।

आदिकवि के कथनानुसार यह भी अवगत होता है कि अंतरिक्ष में बहुत दूरी तक उड़ान भरने वाले सम्पाती ने बताया था—मैं वरुण, इन्द्र और विष्णुलोक को जानता हूं। सम्पाती ने यह नहीं कहा कि मैं वरुण लोक, इन्द्रलोक और विष्णुलोक तक जा चुका हूं। हां, उसी स्थल पर सम्पाती ने यह अवश्य कहा था, 'मैं उस स्थल पर पहुंच गया था, जहां से पृथ्वी का आकार और सूर्य का आकार अर्थात पृथ्वी का गोला और सूर्य का गोला एक समान दीख रहा था।

जानामि वारुणांल्लोकान् विष्णोस्त्रैविक्रमानपि
देवासुर विमर्दाश्च ह्यमृतस्य च विमन्थनम्।
(किष्किन्धा ५८।१३)

यत्नेन महता भूयो रविः समवलोकितः।
तुल्यपृथ्वीप्रमाणेन भास्करः प्रतिभाति मो॥
(किष्किन्धा ६१।१३)

सम्पाती के कथन का उद्धरण देकर आदिकवि ने यह सिद्ध किया था कि विष्णुलोक, वरुणलोक अवश्य हैं।

शिशुमार चक्र

विष्णुलोक की पहचान के लिये भारतीय शास्त्रों और आर्षग्रन्थों में कई संकेत स्थलों की चर्चा है। ज्योतिष-चक्र में जय-विजय नामक दो तारे विष्णुलोक के द्वार पर स्थित बतलाये गये हैं। जय-विजय भगवान विष्णु के दो द्वारपाल हैं। इन दो द्वारपालों को कभी शापवश राक्षसी शरीर धारण करना पड़ा था। जय-विजय दोनों द्वारपाल दो तारों के रूप में आज भी दृश्य होते हैं। इनका दर्शन दूरदर्शक यंत्र के सहारे से भी होता है, बिना सहारा लिए भी होता है। इन दोनों (जय-विजय) तारों में पर्याप्त चमक है। ये दोनों तारे शिशुमार चक्र के दो प्रख्यात तारे हैं। सबसे आश्चर्य तो इस बात का है कि दोनों तारे भारतवासियों को सर्वदा (रात्रि में) दर्शन देते रहते हैं। क्षितिज के परदे पर इनका अदर्शन नहीं होता।

जय-विजय की पहचान

पाठकों को शिशुमार चक्र के विषय में कुछ बताने के

पहले जय-विजय नामक दोनों प्रख्यात तारों की पहचान के लिये, मई के प्रथम सप्ताह में बारह बजे रात्रि के समय ध्रुव की ओर दृष्टि दौड़ानी पड़ेगी। उस समय जय-विजय नामक ये दोनों तारे ध्रुव के ठीक ऊपर दीखते हैं और जून के प्रथम सप्ताह में ये दोनों तारे दो घण्टे पूर्व उस स्थान पर दृश्य होने लगते हैं। ये दोनों तारे ध्रुव की पूरी परिक्रमा २४ घण्टे में करते हैं। इसी आधार पर गांव के कुछ अत्यन्त अनुभवी लोग समय का ज्ञान भी करते रहते हैं। आधुनिक वैज्ञानिक यह भी कहते हैं कि आज से लगभग २५०० वर्ष पूर्व खगोल का उत्तरी ध्रुव शिशुमार चक्र के 'जय' तारा के समीप था। विष्णु पुराण में शिशुमार चक्र के उल्लेख के साथ इसका भी निरूपण किया गया है। इस उल्लेख में यह दर्शाया गया है कि ध्रुव तारा शिशुमार चक्र के पुच्छ के पास है।

तारामयंभगवतः शिशुमाराकृतिप्रभोः।
दिविरूपं हरेर्युतं तस्य पुच्छे स्थितो ध्रुवः॥
(विष्णु २।६।१)

शिशुमार चक्र क्या है? यह केवल तारा पुंजों का समूह है। नक्षत्रों के नामकरण की वास्तविकता पर ध्यान देते ही यह स्पष्ट हो जाता है कि कुछ तारों (चमकते तारों) को मिलाने पर जो आकार (रेखाचित्र) बने उसी आधार पर इनका नामकरण किया गया। अश्विनी, मृगशिरा, हस्त नक्षत्रों के चमकते तारों को मिलाकर रेखाचित्र बनाने से, अश्वमुख, मृगमुख और हाथ के स्पष्ट चिह्न दृश्य होते हैं। इसी आधार पर इनका नामकरण हुआ। अश्विनी, मृगशिरा, हस्त केवल एक तारे का द्योतक नहीं है। कई तारों के पुंजों को अश्विनी, मृगशिरा और हस्त कहा जाता है। श्रवण के तीन चमकते तारों को भगवान विष्णु का 'तीन पग' भी कहा जाता है।

कई चमकते तारों से शिशुमार चक्र भी बनता है। शिशुमार पानी में रहने वाला एक जीव होता है। इसे सूंस भी कहते हैं। यह प्रायः कुण्डली मार कर रहता है। अतः उन तारा मण्डलों का समूह जो ध्रुवतारा के पास एक आकृति बनाते हैं, शिशुमार चक्र के रूप में प्रख्यात हो गये। शिशुमार के विषय में श्रीमद्भागवत में एक विशेष उल्लेख प्राप्त होता है। उसका कुछ हिन्दी रूपान्तर निम्नप्रकार से है। अनन्त आकाश में यह शिशुमार (सूंस) कुण्डली मारे हुए है। इसका मुख भाग नीचे की ओर दृश्य होता है। इसके पूंछ भाग पर ध्रुव (तारा) स्थित है। पूंछ के मध्य भाग में प्रजापति (नामक तारा) एवं, अग्नि इन्द्र, धर्म नामक तारे स्थित हैं एवं पूंछ की जड़ में धाता एवं विधाता नामक दो तारे हैं। शिशुमार चक्र के कटि भाग में सप्तर्षि (जिनका उल्लेख आगे किया जायेगा) मण्डल के सात तारे हैं। यह शिशुमार दाहिनी ओर सिकुड़ कर कुण्डली मारे है। अभिजित (२८ वां नक्षत्र) से लेकर पुनर्वसु पर्यन्त उत्तरायण १४ नक्षत्र इसके दाहिने भाग में स्थित हैं। पुष्य से लेकर उत्तराषाढ़ा पर्यन्तक तक दक्षिणायण के १४ नक्षत्र वाम भाग में स्थित हैं। इसके पीठ भाग में अज बीथी (मूल, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा) नक्षत्र हैं। और उदर भाग में आकाश गंगा है। इसके दक्षिण और वाम चरणों में आर्द्रा, श्लेषा हैं। दक्षिण और वाम भाग के नासापुटों में अभिजित और उत्तराषाढ़ा नक्षत्र हैं। दक्षिण और वाम नेत्रों में श्रवण और पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र हैं। दक्षिण और वाम कर्णों में धनिष्ठा और मूल नक्षत्र हैं। मघा आदि आठ-आठ दक्षिणायण के नक्षत्र बाईं पसलियों में हैं और इसके विपरीत क्रमशः मृगशिरा आदि उत्तरायण के आठ नक्षत्र दक्षिण पसलियों में हैं। शिशुमार के दोनों कन्धों पर शतभिषा और ज्येष्ठा दो नक्षत्र हैं। थूथन में अगस्त्य तारा नीचे ठोढ़ी में यम (प्लूटो) नामक तारा है। मुख भाग में मंगल ग्रह, लिंग भाग में शनिग्रह, ककुद भाग में गुरु, छाती में सूर्य, हृदय में नारायण, मन में चन्द्रमा, नाभि में शुक्र, स्तनों में आश्विनी कुमार, प्राण और अपान में बुध, गले में राहु, समस्त अंगों में केतु और समस्त रोमों में अन्य तारागण स्थित हैं।

(देखें, श्रीमद्भागवत स्क० ५ अध्याय २३।४-७)

यहां यह स्मरण रहे कि श्रीमद्भागवत में महर्षि व्यास जी ने भगवान विष्णु के सर्वदेवमय स्वरूप का

आभास कराने के लिए समस्त ज्योतिषचक्र को शिशुमार चक्र के रूप में उल्लिखित किया है। भगवान का 'मन' चन्द्रमा माना गया। शिशुमार चक्र के मन में चन्द्रमा को स्थित कराया गया है। मंगल, बुध, आदि पंचताराग्रहों को भी शिशुमार चक्र से सम्बन्धित किया गया है।

वैज्ञानिक आधार पर चन्द्रमा इस वसुन्धरा से अति सन्निकट है। चन्द्रमा पृथ्वी की परिक्रमा करता है। (अब तो चन्द्रमा के ऊपर मानव चरण कई बार पहुंच गया।) पंचतारा ग्रहों की अपेक्षा अन्य नक्षत्रों की दूरी असीमित है अथवा बहुत ही दूरस्थ हैं। भारतीय ज्योतिषी शिशुमार चक्र का छोटा रूप अवश्य स्वीकार करते हैं। पाश्चात्य ज्योतिर्विदों के मस्तिष्क में अभी इस शिशुमार चक्र की रूप रेखा समझ में नहीं आई है।

विष्णुलोक और ध्रुव

ध्रुव के विषय में पुराण ग्रन्थों में विस्तार से उल्लेख है। 'ध्रुव' राजा उत्तानपाद की दूसरी रानी के गर्भ से उत्पन्न हुए थे और माता की सलाह से बाल्यकाल में ही तप साधना में लगे थे। तपस्या सफल हुई। भगवान विष्णु के दर्शन हुए और भगवान के वरदान से ध्रुव को पिता का राज्य मिला। अमर पद मिला। ध्रुव अमर हो गये। ध्रुव को भगवान विष्णु के धाम में (स्वर्ग में) द्वार पर स्थान मिला। ज्योतिष्चक्र के उत्तरी भाग में जिस ध्रुव तारा का हम नित्य अविचल रूप से दर्शन करते हैं, उसके सम्बन्ध में हमें व्यापक रूप में विचार करना पड़ता है। वास्तव में ध्रुव के साथ ही सूर्य, चन्द्रमा, पृथ्वी एवं मंगल, बुध, गुरु, शुक्र आदि समस्त ग्रहों के दोनों रूपों पर विचार करना है। एक विचार से उस परब्रह्म परमात्मा की शक्ति सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी सबमें विद्यमान है और उसी विचार से हम उस परब्रह्म परमात्मा की सत्ता को उन ग्रहों में स्वीकार करके उसकी महत्ता में देवत्व को स्वीकार करते हैं। अतः सूर्यदेव, चन्द्रदेव, पृथ्वी देवी आदि की मान्यता परम्परागत आधार पर स्वीकार करते आये हैं। कुछ लोग चन्द्रमा पर मानव चरण के पहुंचने पर चन्द्रमा के देवत्व पर सन्देह करने लगे हैं। चन्द्रमा में देवत्व के ऊपर सन्देह करने वाले जन यह समझ लें कि चन्द्रमा पर मानव चरण पहुंचने के कारण चन्द्रमा में ईश्वर की सत्ता पर आंच नहीं आई। चन्द्रमा में उस ईश्वर की सत्ता उसी प्रकार विद्यमान है। उसी प्रकार ध्रुव एक राजकुमार थे। वह अमर हो गये। उनके अमरत्व का प्रतीक अनन्त आकाश में स्थित वह ध्रुव तारा है जो उस अनन्त अनादि, अरूप, अलख, परब्रह्म की अनन्त शक्ति के आधार पर अविचल रूप में वहां विद्यमान है। यहां एक सन्देह हो सकता है—क्या ध्रुव राजकुमार के पहले यह 'ध्रुव' तारा अनन्त आकाश में नहीं था ? इस प्रश्न के उत्तर में भारतीय पुराण तो यही बताते हैं, 'ध्रुव' एक स्थान है जो भगवान विष्णु के निवास स्वर्ग का द्वार है और उस स्थान पर जिसे स्थापित किया जाता है, उसे ध्रुव अर्थात अविचल कहा जाता है। ध्रुव राजकुमार के पूर्व में भी वह स्थान था। ध्रुव स्थान अविचल है।

आधुनिक वैज्ञानिक ध्रुव के विषय में अपनी भिन्न राय देते हैं। आधुनिक वैज्ञानिकों का यह कथन है कि जिस ध्रुव तारा को हम ध्रुव स्वीकार करते हैं वह तारा सर्वदा से हमारा ध्रुवतारा नहीं है। ये वैज्ञानिक कहते हैं कि यह ध्रुवतारा खगोलीय ध्रुव पर स्थित नहीं है। इस तथ्य को मानने वालों का यह कथन है कि धरा, सूर्य और चन्द्र के आकर्षण के कारण लट्टू की भांति घूमती रहती है। पृथ्वी २४ घंटे में अपनी धुरी पर एकबार परिक्रमा कर लेती है। इसी आधार पर पृथ्वी की धुरी पर (ध्रुव पर) ध्रुव तारों के सापेक्ष खगोली परिक्रमा पूर्ण करने में प्रायः पृथ्वी को २५८०० वर्ष लग जाते हैं। इस लम्बी अवधि में परिक्रमा वृत्त में पृथ्वी की धुरी खगोल के जिस बिन्दु की ओर निर्देश करती है या करेगी, वही बिन्दु, स्थान ध्रुव स्थान होता है या होगा। वैज्ञानिकों के विचार से उस समय उस स्थान पर जो कोई भी तारा होता है उसे ध्रुव तारा कहा जाता है। ईसा पूर्व २७८० में ध्रुव तारा को अकालीय (अल्काडाका) कहा गया था। ध्रुव तारा को देखने के लिये मिश्र में एक ऐसा पिरामिड बनाया गया था, जिसके एक छिद्र से सर्वदा ध्रुवतारा का दर्शन होता था।

ध्रुवतारा हमारी धरा से इतना दूर है कि उसका प्रकाश हमारी पृथ्वी पर पहुंचने में कुल ४७ 'प्रकाश वर्ष' लगते हैं। यह भी पता लगाया गया कि ध्रुव का वास्तविक प्रकाश सूर्य के प्रचण्ड प्रकाश से २५०० गुना अधिक है।

ध्रुवतारा के विषय में वैज्ञानिकों के कथनानुसार ध्रुव तारा की अस्थिरता भले ही सिद्ध हो किन्तु ध्रुवतारा की दूरी ने यह सिद्ध किया कि विष्णुलोक की दूरी इस पृथ्वी से ४७ 'प्रकाश वर्ष' है। एक मिनट में प्रकाश की गति १८६००० मील है। एक मिनट में तथोक्त गति से चल कर ध्रुव का प्रकाश हमारी पृथ्वी पर लगभग ४७ 'प्रकाश' वर्षों में पहुंचेगा। अब आप स्वयं विचार करें कि विष्णु लोक के एक प्रतीक चिह्न ध्रुव की दूरी हम किलोमीटर में कितनी लम्बी संख्या में लिखें?

विष्णुलोक और सप्तर्षि मण्डल

ध्रुव और सप्तर्षि मण्डल का सीधा सम्बन्ध है। 'ध्रुव' जो भगवान के परम भक्त बन गये, उन्हें जब विष्णु लोक के द्वार पर अविचलित स्थान मिला तो सप्तर्षियों ने उनकी प्रदक्षिणा प्रारम्भ कर दी। आज भी वह प्रदक्षिणा चल रही है। सप्तर्षि मण्डल के सात तारे सात प्राचीन ऋषियों के नाम पर प्रख्यात हैं। ये तारे हैं, १=क्रतु, २-पुलह, ३-पुलस्त्य, ४-अत्रि, ५-अंगिरा, ६-वसिष्ठ, ७-मरीचि। वसिष्ठ ऋषि की पत्नी का नाम अरुन्धती था और सप्तर्षि के वसिष्ठ के पास में ही अरुन्धती नामक तारा भी है। पुलह और क्रतु तारा से (सप्तर्षि चौखटे के दो तारों से) एक सीधी रेखा बनाने पर वह रेखा ध्रुव तक पहुंचती है। सप्तर्षि मण्डल के सात तारों में चार तारों का चौखटा है और उस चौखटे में क्रतु, पुलह, पुलस्त्य और अत्रि नामक चार तारे हैं। इस चौखटा के ऊपर (अत्रि से ऊपर) अंगिरा तारा है। अंगिरा के ऊपर वसिष्ठ, वसिष्ठ के पार्श्व भाग में अरुन्धती और वसिष्ठ के ऊपर सातवां तारा मरीचि है। सप्तर्षि मण्डल का उल्लेख आचार्य वाराह मिहिर ने बहुत सुन्दर ढंग से उपस्थित किया है।

"पूर्वे भागे भगवान् मरीचिरपरे स्थितो विसिष्ठो स्मात् तस्याङ्गिरा स्ततोत्रि सत्यस्पासन्नः पुलस्त्यश्च पुल्यः क्रतु-रिति भगवानसन्नानुक्रयेण पूर्वाधाः, तत्र वसिष्ठ मुनि वरस्पा श्रिता रुन्धती साध्वी।" वाराही सं० १३।६

ध्रुव के आधार पर विष्णुलोक के द्वार भाग की ऊंचाई का अनुमान ४७ प्रकाश वर्षों में लगाया गया। विष्णुलोक का कुछ भाग ८० 'प्रकाश वर्ष' की दूरी से भी ऊपर है। सप्तर्षि एक तारा क्रतु अत्यन्त प्रकाशित दीखता है। क्रतु का प्रकाश ८० प्रकाश वर्ष में पृथ्वी पर पहुंच पाता है। इस प्रकार क्रतु तारा से विष्णु लोक की दूरी का अनुमान लगाया जा सकता है। पुलह का प्रकाश पृथ्वी पर ७५ 'प्रकाश वर्षों' में पहुंच पाता है। वसिष्ठ तारा का भी प्रकाश पृथ्वी पर ८० प्रकाश वर्षों में पहुंच पाता है। अरुन्धती का प्रकाश वसिष्ठ तारा के पास अस्सी दिनों में पहुंचता है। यह पहले लिखा जा चुका है कि सप्तर्षि मण्डल के सातों तारे ध्रुव की प्रदक्षिणा करते हैं। उनकी प्रदक्षिणा २४ घण्टों में पूरी होती है। ध्रुव की पहचान बहुत सरल है।

विष्णुलोक के पास अनन्तनाग के तारे

शिशुमार चक्र के पास ही अनन्तनाग या शेषनाग के तारे भी दृश्य होते हैं। अनन्तनाग मण्डल के तारे सूक्ष्म हैं। किन्तु ध्यानपूर्वक देखने और उनके क्रमों से रेखाचित्र बनाने पर स्पष्ट रूप से वृहदाकार सर्प का आभास होता है। सिर भाग के तारे अत्यन्त चमकीले हैं। ये ही तारे अनन्तनाग की आंखें प्रतीत होते हैं। ये तारे ध्रुव के कई भाग में दृश्य होते हैं, अतः इसको समुद्र मन्थन के समय रस्सी के रूप में प्रयोग किये जाने की चर्चा है। यह अनन्तनाग विष्णुलोक के पास माना गया है। इसकी चर्चा श्रीमद्भागवतपुराण में भी है।

(देखें, श्रीमद्भागवत २।८।२६)





● ज्योतिषरत्न पं० राजाराम जैन

२ दिसम्बर को ज्येष्ठायां रवि (धनांशे शनि सूर्य ता० ५ तक) ता० ३ को शुक्र-हर्षल केन्द्र शेयर्स सोना चांदी के साथ सभी वस्तुयें मन्दी होंगी।

ता० ४ को भौम दृष्ट वृश्चिके बुध होते ही सूर्य + बुध योग दाल अन्न के साथ गुड़ भी मन्दा, घी तेल ता० ५ को सूर्य-नेपच्यून क्रान्तिसाम्य वर्षा और मन्दी कारक १।४५ बजे बुध-हर्षल द्विद्विश से वायदों में मन्दा, ता० ७ को बुध-गुरु क्रान्तिसाम्य वर्षा और तेजी कारक है।

ता० ६ की रात को अनुमें बुध से वायुयान दुर्घटना, जनता की संगठन शक्ति से गुण्डों के उत्पात शान्त करेगा। व्यापारिक वस्तुयें मन्दी होंगी। ता० ६ की रात को मार्गी अवस्था में (दोनों) भौम-हर्षल दृष्टि से महोत्पात् नेताओं पर संकट सभी वस्तुओं में तूफानी तेजी-मन्दी होगी।

ता० १० चतुर्दशी परतः पूर्णिमा रविवार की पिछली रात्रि को रोहिणी नक्षत्र वृष राशि पर ग्रस्तास्त चन्द्र ग्रहण काशी, बिहार, उड़ीसा, बंगाल, आसाम, कालीकट, मद्रास और सारे केरल को छोड़कर शेष समस्त भारत में ६।३६ बजे से प्रातः सूर्योदय होते ही ग्रस्तावस्था में ही चन्द्रमा अस्त हो जावेगा। चांदी पोस्ता अफीम १५ दिन पहले से ही बेचना, खाद्य वस्तुयें मन्दी में संग्रह करके दूसरे या पांचवें मास में बेचने से लाभ होगा। ग्रहण काल में बादल हों तो सभी खाद्य वस्तुओं में अच्छा मन्दा आता है। दिसम्बर लगते ही पूरे मास में शीत कम पड़े तो इस ऋतु में निश्चित रूप से अच्छी वर्षा, अधिक शीत रहे तो वर्षा नहीं हो पाती। सूतक रविवार की रात को ६।३६ बजे से लगेगा।

साराँश :—१५ दिसम्बर की शाम को वायदे की वस्तुओं पर तेजी लगावें। ता० २०।२६ की शाम को मन्दी की, ता० २६ की शाम को दोनों गली, २ दिसम्बर की शाम को मन्दी की ता० ८ की शाम को दोनों गली ता० १२ की शाम को मन्दी लगावें।

पौष मास :—कृष्णा १ का क्षय मन्दी कारक, किन्तु चन्द्र + शनि योग फल २।४० बजे तक, आज चन्द्र-शनि युति १ बजे तक शेयर्स तेल के बीज तेज, रात को ७ बजे से वृषांशे राहु-भौम ता० २३ तक तथा ज्येष्ठायां रवि का अश्वे भौम से च० वेध कल १।४२ बजे तक रुई रेशम पाट मन्दे, चावल घी तेल के बीज तेज करेगा।

१३ दिसम्बर श्रवणे शुक्र (गुरु शुक्र श्रवण में) अन्नादि के साथ तेल के बीज भी मन्दे होंगे। सोना चाँदी सर्व धातुएँ भी मन्दी हो सकेगी।

ता० १४ बुध-शुक्र क्रान्तिसाम्य (युति) से वर्षा और मन्दी किन्तु बुध नेपच्यून युति से तेजी, ता० १५ को चन्द्र शनि त्रिरेकादश समर्थक होगा।

१५ दिसम्बर को ७।५० बजे श्री सूर्यदेव शनिवार में वारात् ३ नक्षत्रात् ४ (३० मुहूर्ता) राहु से युक्त शनि से प्रतियोग करते हुये धनु राशिस्थ होंगे, फलतः रुई रेशम ऊन पाट कालीमिर्च कपड़ा में १ मास तक मन्दी के कारण बनेंगे। सोना चाँदी सर्वधातु में तेजी होगी।

मेषांशे शुद्ध-सूर्य ता० १८ तक तेल के बीज तेज, रात को ज्येष्ठायां बुध (धनांशे शनि बुध ता० १७ तक) मन्दी का झटका देकर तेजी करेगा।

ता० १६ को पूर्वी हिन्द में पूर्वास्तो बुध रात से बादल वर्षा वायुवेग शीतवृद्धि तेल के बीज दाल अन्नादि में मन्दी का धड़ाका किन्तु भौम की दृष्टि तेजी भी ला सकती है, रुई रेशम पाट कालीमिर्च ऊन सोना चांदी में तेजी आने की आशा है। चलती लाइन का उपयोग करें।

ता० १७ शुक्र नेपच्यून क्रान्तिसाम्य शीत-प्रकोप या वर्षा, ता० १८ को चन्द्र-गुरु त्रिकोण से १२।२३ बजे तक मन्दा साथ ही बुध-शनि क्रान्ति साम्य तेजी का समर्थक है। सायं वृषांशे राहु-भौम शुक्र ता० २३ तक तेल के बीज तेज, कृष्णा वा शुक्ला ६।११ को उ० प्र० पंजाब राजस्थान म० प्र० में प्रातः पूर्व में मेघ गर्जना, वर्षा रहित पश्चिमी वायु का प्रकोप जहाँ भी होगा, उस क्षेत्र में वर्षा नाश होकर घोर तेजी होगी। ता० १६ को सूर्य-हर्षल त्रिरेकादश शेयर्स के साथ सभी वस्तुयें तेज करेगा। डेढ़ बजे चन्द्र-भौम दृष्ट से शेयर्स तेल के बीज तेज, गुड़, खांड़ मन्दे होंगे।

ता० २० ज्येष्ठायां बुध का अश्वे भौम से च० वेध ता० २२ को १२।१४ बजे तक सभी वस्तुयें तेज, शाम को ७ बजे सूर्य-राहु युति से रुई रेशम पाट शेयर्स काली-मिर्च मन्दे, चांदी तेज होगी।

ता० २१ को सूर्य-भौम त्रिकोण उपर्युक्त सभी वस्तुयें तेज करेगा। ता० १७ को चली व्यापारिक वस्तुओं की चाल बड़े जोर-शोर से बदलेगी।

ता० २२ मिथुनांशे गुरु-सूर्य ता० २५ तक तेल के बीज दाल अन्नादि मन्दे कृष्णा १३ शनिवारी वर्षा भी करे तो घी तेल के बीज तेज होंगे।

ता० २४ को कृष्णा ३० सोमवारी मूल संयोगी संवत् २०१०।२०१३ २०२७ की भाँति पुनः आई है जो आगामी उपज को निश्चित रूप से श्रेष्ठ बनावेगी, अविश्वासियों को चुनौती है अन्यथा समय तो बता ही देगा। आगामी माघ मास में किसी महान नेता का अवसान या दुष्काण्ड, घोर मन्दा भी सम्भव है। चन्द्र-राहु युति ११।४६ बजे से तेजी भी ला सकेगी। सायं ४।२५ बजे धनुषि बुध होकर राहु+सूर्य+बुध योग चाँदी सोना तांबा जस्ता पीतल रांगा सीसा आदि में अच्छी तेजी लावेगा।

पौष शुक्ला :—ता० २५ से गुरु शीघ्री-शनि वक्री होने से वर्षा नाश और घोर तेजी सम्भव, द्वितीया को बुधवारा (४५ मुहूर्ता) उत्तर-शृङ्गी चन्द्रोदय सभी वस्तुओं में मन्दी कारक, शुक्ला २ बुधवारी शुक्ला ५ की वृद्धि परतः षष्ठी रविवारी शुक्ला ६ परतः दशमी गुरुवारी फलतः देशी घी में मन्दा आ चुका हो तो खरीदें अन्यथा मन्दा आ जाने पर अन्य सभी खाद्य वस्तुओं में मन्दी आ जाने पर खरीदें। पौष व माघ के मास के शुक्ल पक्ष में दिन भर वायु चलकर शाम को बन्द होते ही उसी रात को जोर का पाला भी पड़ता है। दक्षिणी वायु जितनी जोर से चलती है तदनुसार वर्षा भी निश्चित रूप से होती है। ता० २७ को बुध-शुक्र त्रिरेकादश से तेजी, १२।१६ बजे भौम-शनि त्रिरेकादश से घटाबढ़ी या तेजी, सायं ४।२७ बजे बुध-राहु युति चांदी सोना के साथ सभी वस्तुयें तेज करेगी। रात से कर्कांशे गुरु-सूर्य कल तेज के बीज मन्दे, गुड़ खांड़ तेज होंगे।

ता० २८ चन्द्र-गुरु युति २।४२ बजे तक शेयर्स तेज के बीज गुड़ खांड़ चना मन्दे, रात को पूषायाँ रवि (वक्री रौद्रे शनि से ५ जनवरी तक डबल वेध) घी चावल तेल दाल अन्न ज्वार बाजरा मक्का नमक क्षार गुड़ खांड़ तेज, रुई रेशम पाट मन्दे रात को सूर्य-प्लूटो केन्द्र महान दुर्घटनात्मक योग है।

ता० २६ बुध-शनि दृष्टि से तेजी, सायं २।२६ बजे भौम-बुध त्रिकोण समर्थक है। ता० ३१ को कर्कांशे गुरु-बुध कल तक बादल वर्षा उ० प्र०, पंजाब, राजस्थान, म० प्र० में होगी तो तेल के बीज अन्नादिक मन्दे होंगे।

पता—११६ कटरा स्ट्रीट
मैनपुरी (उ० प्र०)



मनु

[यह मासिक फल गोचर पद्धति से कहा गया है, यदि यह आपकी दशा भुक्ति के अनुकूल हो तो पक्के रूप से फलीभूत होगा। दशा मुक्ति को ज्ञात करने के लिए ज्योतिष टाइम्स, गणित विभाग को लिखें—सम्पादक]

ग्रह गति

१५ दिसम्बर को सूर्य धनु राशि में जाता है, मंगल सारा मास मेष राशि में रहता है, बुध ४ को वृश्चिक और २४ को धनु राशि में प्रवेश करता है, गुरु और शुक्र सारा मास मकर में रहते हैं, शनि सारा मास मिथुन में रहता है तथा राहु सारा मास धनु में रहता है।



मेष

जन्माक्षर—चू चे चो ल अ

ग्रह चलन—सूर्य अष्टम तथा नवम में, मंगल लग्न में, बुध अष्टम तथा नवम में, गुरु तथा शुक्र दशम में, शनि तृतीय में, राहु नवम में।

साधारण—शनि के कारण मित्रों से लाभ रहे, परन्तु आरम्भ में मित्रों से हानि तथा पृथकता रहे, उत्तरार्द्ध में पिता एवं वृद्धों से अनबन का भय है।

आर्थिक—राजकीय निम्न वर्ग के लोगों द्वारा आय में वृद्धि की संभावना है परन्तु उच्चस्तरीय राज्याधिकारियों पर व्यय की अधिक सम्भावना है।

भूमि—मंगल तथा चतुर्थ भाव की अनुकूल स्थिति के कारण भूमि प्राप्ति अथवा मकान प्राप्ति का अच्छा योग है, मास के पहले आधे भाग के अन्तिम दिनों में सुख शांति में वृद्धि की आशा रखनी चाहिये।

कर्मचारी—नवम भाव पर पाप प्रभाव के कारण तथा नवमेश के नीच होने के कारण राज्य से वृद्धि आदि की आशा नहीं रखनी चाहिए। मंगल आदि की स्थिति के कारण चन्द्र के तुला पर आने पर स्थान परिवर्तन की सम्भावना है।

व्यवसाय—व्यवसाय के लिये ग्रहयोग मध्यम है पहले हानि अन्त में लाभ का योग है। भागीदारों से सम्बन्ध बिगड़ने की सम्भावना है क्यों कि शनि आदि का प्रभाव सप्तम भाव पर है।

स्त्रियां—सप्तमेश नीच गुरु के साथ है अतः वैवाहिक जीवन में अभी स्थिति में सुधार की बहुत कम संभावना है, हां पति के सुख में वृद्धि की सम्भावना पर्याप्त है।

छात्र—गुरु का प्रभाव द्वितीय भाव तथा द्वितीयेश दोनों पर होने से विद्या में विशेष उन्नति की संभावना है।

चन्द्राष्टम—२४ नवम्बर प्रातः ७ बजकर ५४ मिनिट से २६ नवम्बर सायं ७ बजकर ३४ मिनट तक।



वृषभ

जन्माक्षर—इ उ ए ओ ब

ग्रहचलन—सूर्य सप्तम और अष्टम में, मंगल द्वादश में बुध सप्तम और अष्टम, गुरु और शुक्र नवम, शनि द्वितीय तथा राहु अष्टम में।

साधारण—सूर्य पर शनि की दृष्टि के कारण घर से बाहर रहने के अवसर बहुत प्राप्त हों। बुध और सूर्य पर केतु और शनि के प्रभाव के कारण आखों में कष्ट की सम्भावना है।

आर्थिक—मास के आरम्भ में धन हानि का योग है क्योंकि बुध बहुत पीड़ित है परन्तु गुरु तथा शुक्र की नवम स्थिति के कारण मास के उत्तरार्द्ध में भाग्य में वृद्धि का योग बनता है।

भूमि—भूमि प्राप्ति का अच्छा योग है। यदि भूमि संबन्धी बात चीत पूर्ण रूपेण सफल नहीं हाती तो उसमें मुख्य कारण स्वयम आप ही हैं।

कर्मचारी—कर्मचारी वर्ग के लिए वृद्धि का अच्छा समय है क्योंकि राजयोग कारक धन स्थान में वक्री होकर स्थित है।

व्यवसाय—मास के पूर्वार्द्ध में मंगल की स्थिति व्यवसाय के लिए लाभप्रद है। चल धन से आय की अच्छी आशा रखनी चाहिए परन्तु उत्तरार्द्ध में स्थिति बिगड़ने का भय है।

स्त्रियां—पूर्वार्द्ध में पति की वृद्धि की सम्भावना है परन्तु उत्तरार्द्ध में पति को मान हानि का भय है स्वयम अपने लिए उत्तरार्द्ध भाग्य में वृद्धि कारक है।

छात्र—छात्रों के लिए यह समय अपने माता-पिता से दूर रहने का है। कुछ एक विद्यार्थियों में घर से भाग जाने की प्रवृत्ति के जागने की संभावना है विद्या में उन्नति हो परन्तु बाधा के साथ। जो लोग डाक्टरी विद्या पढ़ रहे हैं उनकी विद्या में उन्नति हो।

चन्द्राष्टम—२६ नवम्बर सायं ७ बजकर ३४ मिनिट से २९ नवम्बर प्रातः ८ बजकर ३२ मिनिट तक।



मिथुन

जन्माक्षर—क घ छ ह।

ग्रहचलन—सूर्य छठे तथा सातवें, मंगल ग्यारहवें, बुध छठे तथा सातवें, गुरु तथा शुक्र आठवें, शनि लग्न में तथा राहु सप्तम भाव में।

साधारण—मित्रों से तथा अनुजों से परेशानी का समय है क्योंकि शनि की दृष्टि तृतीय भाव तथा तृतीयेश दोनों पर है परन्तु धन प्राप्ति के लिए यह योग अच्छा है।

आर्थिक—सूर्य के पीड़ित होने के कारण तथा गुरु और शुक्र के धन स्थान पर प्रभाव के कारण आय अच्छी रहे।

भूमि—भूमि प्राप्ति का योग बुध पर पापी प्रभाव के कारण खण्डित है। वैसे सुख सामग्री में वृद्धि का योग है।

कर्मचारी—गुरु और शनि में षडष्टक होने के कारण कर्मचारी वर्ग को सरकार से प्राप्ति की आशा नहीं रखनी चाहिए। हां थोड़े से लाभ की आशा अवश्य रखनी

चाहिए क्योंकि शनि वक्री तथा नवमेश होकर लग्न में स्थिति है।

व्यवसाय—व्यवसाय के भाव पर अधिक पाप प्रभाव है और सप्तमाधिपति अष्टम में नीच है। अतः व्यवसाय में हानि की संभावना है। पुखराज पहनने से इस दिशा में सुधार की आशा रखनी चाहिए।

स्त्रियां—स्त्री के पति भाव पर पृथकता जनक ग्रहों का प्रभाव है और गुरु स्वयं पति रूप होकर अष्टम मे नीच राशि में स्थित है अतः घरेलू जीवन में वैमनस्य की सृष्टि की अधिक संभावना है। पीला पुखराज पहनने से इस दिशा में कुछ लाभ रहे।

छात्र—मंगल की स्थिति यद्यपि बुद्धि में प्रखरता देती है तो भी बुध की स्थिति शनि और राहु के प्रभाव के कारण सन्तोषजनक नहीं है। अतः विद्या में हानि ही की अधिक संभावना है।

चन्द्राष्टम—२९ नवम्बर प्रातः ८ बजकर ३२ मिनिट से १ दिसम्बर रात्रि ९ बजकर ९ मिनिट तक।



कर्क

जन्माक्षर—हि हू हे हो उ।

ग्रहचलन—सूर्य पञ्चम तथा षष्टम, मंगल दशम, बुध पञ्चम तथा छठे, गुरु तथा शुक्र सप्तम, शनि द्वादश तथा राहु छठे भाव में।

साधारण—तृतीयेश शत्रु स्थान में पापयुक्त पापदृष्ट है अतः मित्रों से अभी भी सचेत रहने का समय है। आखों में कष्ट का भी योग है।

आर्थिक—आर्थिक स्थिति में अवनति की सम्भावना है क्योंकि द्वितीय तथा द्वितीयेश दोनों पर शनि की पूर्ण दृष्टि है।

भूमि—शुक्र यद्यपि केन्द्र में है तो भी पर्याप्त रूप से पीड़ित है अतः भूमि आदि की प्राप्ति की संभावना नहीं अपितु वाहन आदि के बिक जाने का योग है क्योंकि वाहन कारक शुक्र चतुर्थेश होता हुआ पीड़ित है।

कर्मचारी—कर्मचारियों की स्थिति में सुधार की आशा करनी चाहिए क्योंकि योग कारक मंगल दशम भाव स्वक्षेत्री है परन्तु बहुत आशा नहीं रखनी चाहिए क्योंकि नवमेश गुरु नीच है।

व्यवसाय—शनि पर सूर्य की दृष्टि तथा गुरु की सप्तम स्थिति के कारण व्यापार में सुधार की आशा न करनी चाहिए। भागीदारों से भी वैमनस्य की सम्भावना है।

स्त्रियाँ—स्त्रियों के लिए नीच गुरु की सप्तम में स्थिति अवांछनीय है। शुक्र के कारण घरेलु वातावरण में कुछ सुधार की सम्भावना अवश्य है।

छात्र—विद्या के सभी अंग द्वितीय भाव, उसका स्वामी और बुध शनि के प्रभाव में है तथा राहु से भी पीड़ित है। ऐसी स्थिति में विद्या में हानि अनिवार्य है।

चन्द्राष्टम—४ नवम्बर दोपहर १ बजकर १८ मिनिट से ६ नवम्बर रात्रि १० बजकर ३ मिनिट तक।



सिंह

जन्माक्षर—म ट टी टू टे।

ग्रहचलन—सूर्य चतुर्थ ओर पन्चम, मंगल नवम, बुध चतुर्थ तथा पंचम, गुरु तथा शुक्र छठे, शनि एकादश तथा राहु पंचम भाव में।

साधारण—मित्रों की ओर से व्यवहार में अधिक क्रूरता तथा शत्रुता आ जाने की संभावना है। स्वयम को वायु रोग से पीड़ित होने का योग है क्योंकि लग्नेश तथा लग्न दोनों पर शनि और राहु का प्रभाव है यदि आपका चन्द्र भी सिंह राशि, अथवा धनु राशि में है तो आपका

वायु रोग से पीड़ित होना निश्चित है । शनि तथा राहु की पूजा करनी चाहिए ।

आर्थिक—गुरु की दृष्टि द्वितीय भाव पर होने से स्थिति में कुछ सुधार हो परन्तु बुध के अभी भी पीड़ित होने से पूर्ण सुधार की आशा नही करनी चाहिए ।

भूमि—भूमि प्राप्ति का योग काफी अच्छा है क्योंकि पुत्र मंगल स्वयम चतुर्येश होता हुआ स्वक्षेत्री है और गुरु शुक्र के केन्द्रीय प्रभाव में है । मूंगा पहनने से इस दिशा में अधिक लाभ की सम्भावना है ।

कर्मचारी—मंगल की स्वक्षेत्र में नवम भाव में स्थिति और उस पर गुरु तथा शुक्र का केन्द्रीय प्रभाव भाग्य में कुछ उन्नति का सूचक है परन्तु कम क्योंकि गुरु नीच है ।

व्यवसाय—शनि सप्तमेश होता हुआ लाभ स्थान में मित्र में वक्री होकर स्थिति है । मशीनरी, लोहा, कोयला, चमड़ा आदि शनि के पदार्थों से अच्छा लाभ रहे ।

स्त्रियां—शनि तथा सूर्य का प्रभाव पति द्योतक अंगों पर है अतः वैवाहिक जीवन में अभी वैमनस्य का वातावरण बना रहे । पुखराज पहनने से इस दिशा में लाभ रहे ।

छात्र—मास के उत्तरार्द्ध में बुध की स्थिति अच्छी नहीं रहती अतः मास के उत्तरार्द्ध में विद्या में बाधा का कुछ डर है ।

चन्द्राष्टम—रात्रि १० बजकर ३ मिनट से ८ नवम्बर प्रातः २ बजकर ५४ मिनिट तक ।



कन्या

जन्माक्षर—टो श प ष उ

ग्रहचलन—सूर्य तृतीय और चतुर्थ में, मंगल अष्टम बुध तृतीय तथा चतुर्थ, गुरु तथा शुक्र पन्चम, शनि दशम तथा राहु चतुर्थ भाव में ।

साधारण—दोस्तों तथा भाइयों पर व्यय अधिक हो आंखों में कष्ट की संभावना है ।

आर्थिक—मंगल की धन भाव पर दृष्टि के कारण धन हानि का योग है । हीरा पहनने से इस दिशा में सुधार हो ।

भूमि—चतुर्थ भाव पर पाप प्रभाव है, गुरु नीच है अतः भूमि प्राप्ति की आशा नहीं करनी चाहिए ।

कर्मचारी—कर्मचारियों के लिए सूर्य राहु तथा शनि का चतुर्थ पर प्रभाव स्थान की तबदीली का सूचक है । बुध कामकाज में भी तबदीली करवाता है ।

व्यवसाय—व्यवसाय में बहुत परिवर्तन हो क्योंकि दशमेश बुध सूर्य शनि तथा राहु के प्रभाव में है । गुरु की नीचता तथा शनि की सप्तम पर दृष्टि के कारण व्यापार में हानि की संभावना है, परन्तु सूर्य के विपरीत योग के कारण अन्न में बहुत लाभ हो ।

स्त्रियां—सप्तमेश स्वयं गुरु हैं, वह नीच है सप्तम पर शनि की दृष्टि है । केवल शुक्र का योग लाभदायक है अतः घरेलू जीवन वैमनस्य से खाली नहीं । पीला पुखराज पहनने से लाभ रहे ।

छात्र—विद्या में सुधार के ग्रह हैं । शुक्र गुरु के साथ है, मंगल उच्च अष्टम में है । शनि की दृष्टि भी अधिक हानि कारक नहीं ।

चन्द्राष्टम—८ नवम्बर प्रातः २ बजकर ५४ मिनिट से १० नवम्बर प्रातः ४ बजकर ५२ मिनिट तक ।



तुला

जन्माक्षर—र न नी ने

ग्रहचलन—सूर्य द्वितीय तथा तृतीय में, मंगल सप्तम में, बुध द्वितीय तथा तृतीय में, गुरु तथा शुक्र चतुर्थ में, शनि नवम में, तथा राहु तृतीय भाव में ।

साधारण—भाग्य में शीघ्र परिवर्तन का योग बनता है । सम्बन्धियों के प्रति व्यवहार में सद्भाव अधिक हो जावे ।

आर्थिक—मंगल की स्वक्षेत्र पर दृष्टि के कारण तथा गुरु और शुक्र के मंगल पर प्रभाव के कारण व्यापार से अर्थ में वृद्धि हो।

भूमि—शनि बलवान है मंगल भी बलवान है अतः भूमि प्राप्ति का योग है परन्तु नीच गुरु द्वारा बहुत हद तक खण्डित हो चुका है।

कर्मचारी—शनि की अच्छी स्थिति के कारण तथा गुरु और शुक्र की दशम भाव पर दृष्टि के कारण राज्य में वृद्धि की आशा करनी चाहिए।

स्त्रियां—स्वक्षेत्री मंगल के कारण घरेलू जीवन में वृद्धि की आशा करनी चाहिए।

छात्र—विद्या के लिए योग मध्यम चल रहा है मंगल की द्वितीय स्थान पर दृष्टि विद्या में उन्नति की द्योतक है परन्तु बुध पर राहु और शनि का प्रभाव विद्या में बाधा का सूचक है।

चन्द्राष्टम—१० नवम्बर प्रातः ४ बजकर ५२ निनिट से १३ नवम्बर प्रातः ५ बजकर ४१ मिनिट तक।



वृश्चिक

जन्माक्षर—तो न य यी यु

ग्रहचलन—सूर्य पहले तथा दूसरे भाव में, मंगल छठे बुध पहले और दूसरे, गुरु और शुक्र तीसरे, शनि अष्टम भाव में, राहु द्वितीय भाव में।

साधारण—शनि के बल के कारण मित्रों से लाभ रहे जान बूझ कर कार्य में परिवर्तन किया जावे, व्यय अधिक हो। अचानक बीमार हो जाने का भय है क्योंकि अष्टमेश पीड़ित है।

आर्थिक—धन स्थान पर पाप प्रभाव अधिक है धनेश गुरु नीच है अतः आर्थिक क्षेत्र में हानि का योग है।

भूमि—शनि के बल के कारण भूमि प्राप्ति का अच्छा योग है विशेषतया मास के पूर्वार्द्ध में।

कर्मचारी—दशमेश सूर्य पर तथा दशम भाव पर शनि का प्रभाव है। नौकरी व्यवसाय से हट जाने का योग बनता है।

व्यवसाय—मास के पूर्वार्द्ध में सप्तम भाव पर पाप बाहुल्य है अतः व्यवसाय के लिए मास का उत्तरार्द्ध कुछ अच्छा है।

स्त्रियां—मास के पूर्वार्द्ध में सप्तम भाव पर सूर्य मंगल तथा शनि के प्रभाव के कारण घरेलू जीवन में सद्-व्यवहार की संभावना कम है।

छात्र—शनि की द्वितीय भाव पर तथा बुध पर दृष्टि है और द्वितीयेश गुरु नीच है अतः विद्या में उन्नति की आशा कम है।

चन्द्राष्टम—१३ नवम्बर प्रातः ५ बजकर ४ मिनिट से १५ नवम्बर प्रातः ६ बजकर ५७ मिनिट तक।



धनु

जन्माक्षर—ये यो भ भि भु ध फ ढ भे

ग्रहचलन—सूर्य पहले तथा द्वादश में, मंगल पंचम में बुध पहले तथा द्वादश में, गुरु तथा शुक्र द्वितीय में, शनि सप्तम में, राहु लग्न में।

साधारण—व्यापार में हानि स्त्री से पृथकता धन हानि आदि अनिष्ट फल सूचित होते हैं।

आर्थिक—गुरु तथा शुक्र की स्थिति धन के लिए अच्छी नहीं क्योंकि गुरु नीच है और शुक्र का अधिपत्य बुरा है।

भूमि—नीच गुरु के साथ शुक्र की स्थिति भूमि प्राप्ति में विलम्ब करती है यद्यपि शनि क्षेत्र प्राप्ति का योग बनाता है।

कर्मचारी—कर्मचारियों को सचेत रहना चाहिए नव-मेश सूर्य पर शनि का पाप प्रभाव है, यह योग राज्याधि-कारियों द्वारा हानि पहुंचाने का सूचक है।

व्यवसाय—बुध की अनिष्ट स्थिति के कारण व्यापार से अचानक हानि की संभावना है कपड़ा आदि बुध संबंधित व्यापारियों के लिए यह योग विशेष रूप से हानि कारक है ।

स्त्रियां—बुध के पीड़ित होने के कारण वैवाहिक जीवन में तुरन्त और अचानक अनिष्ट परिवर्तन का योग है । पन्ना पहनने से इस दिशा में लाभ रहे ।

छात्र—गुरु और शुक्र की स्थिति विद्या में मध्यम स्थिति उत्पन्न करती है अतः विद्या जैसे चल रही है वैसे चलती रहे । स्थिति बिगड़ने की आशंका नहीं है ।

चन्द्राष्टम—१५ नवम्बर प्रातः ६ बजकर ५७ मिनिट से १७ नवम्बर प्रातः ६ बजकर ५२ मिनिट तक ।



मकर

जन्माक्षर—यो ग ख ज गि

ग्रहचलन—सूर्य नया बुध एकादश तथा द्वादश, मंगल चतुर्थ में, गुरु तथा शुक्र लग्न में, शनि छठे, राहु द्वादश में ।

साधारण—मित्र वश में रहें । शुभ कर्मों में प्रवृत्ति बढे । शत्रु उत्पन्न हो जावें यद्यपि अन्त में नाश भी हो जावे ।

आर्थिक—शनि के बल के कारण तथा गुरु तथा शुक्र की लग्न में स्थिति के कारण धन में वृद्धि हो ।

भूमि—भूमिपुत्र स्वयं चतुर्थ में स्वक्षेत्री है और गुरु तथा शुक्र के शुभ प्रभाव में है अतः भूमि प्राप्ति का योग है विशेषतया मास के उत्तरार्द्ध में ।

कर्मचारी—शुक्र योग कारक की मित्र राशि में काफी अच्छी है परन्तु बुध पर मंगल का प्रभाव है अतः मास का उत्तरार्द्ध कुछ अच्छा है ।

व्यवसाय—मास के मध्य में जब चन्द्र बलवान हो तो गुरु शुक्र की सप्तम पर दृष्टि के कारण व्यापार में उन्नति की आशा करनी चाहिये ।

स्त्रियां—मास के मध्य में घरेलू जीवन में काफी सद्भाव की संभावना है । यह समय पति के मान आदि के लिये भी अच्छा है ।

छात्र—द्वितीयेश शनि षष्ट भाव में वक्री होकर बलवान है अतः विद्या में उन्नति की आशा करनी चाहिये ।

चन्द्राष्टम—१७ नवम्बर प्रातः ६ बजकर ५२ मिनिट से १६ नवम्बर दोपहर २ बजकर ५७ मिनिट तक ।



कुम्भ

जन्माक्षर—गु गे गो स द

ग्रह चलन—सूर्य और बुध दशम और एकादश में, मंगल तृतीय में, गुरु तथा शुक्र द्वादश में, शनि पञ्चम तथा राहु एकादश में ।

साधारण—स्वक्षेत्री मंगल पर शुभ केन्द्रीय प्रभाव के कारण मित्रों से लाभ रहे । शुभ व्यय हो, मान में वृद्धि हो ।

आर्थिक—धनेश गुरु नवमेश शुक्र के साथ द्वादश में है व्यय अधिक हो । शनि की द्वितीय भाव पर दृष्टि के कारण धन में कमी खटके ।

भूमि—चतुर्थ भाव पर पाप मध्यत्व भी है और पाप दृष्टि भी अतः भूमि प्राप्ति का योग पूर्ण नहीं ।

कर्मचारी—दशमेश मंगल की स्थिति अच्छी है अतः मित्रों के सहायता से उन्नति की आशा करनी चाहिये ।

व्यवसाय—व्यवसाय में हानि का कारण स्वयम आप सिद्ध हो सकते हैं क्योंकि शनि लग्नेश होकर सप्तम भाव तथा सप्तमेश पर दृष्टि डाले हुए हैं ।

स्त्रियां—चूंकि शनि द्वारा ही सप्तम सप्तमेश को हानि पहुंच रही है लौर शनि लग्नेश है अतः यदि पति से वैमनस्य की सृष्टि होती है तो उसका अधिकांश कारण आप की अपनी स्वच्छन्दता है।

छात्र—द्वितीयेश द्वादश में है। द्वितीय स्थान तथा बुध पर शनि की दृष्टि है अतः विद्या में हानि का भय है। पुखराज पहनने से इस दिशा में कुछ लाभ रहे।

चन्द्राष्टम—१९ नवम्बर दोपहर २ बजकर ५७ मिनट से २१ नवम्वर रात्रि १० बजकर १९ मिनट तक।



मीन

जन्माक्षर—दि दु थ भ दे दो चा ची

ग्रह चलन—सूर्य तथा बुध नवम और दशम भाव में, मंगल द्वितीय में, गुरु तथा शुक्र एकादश में, शनि चतुर्थ तथा राहु दशम भाव में।

साधारण—मित्र तथा बड़े भाई के पुत्र से लाभ हो। शत्रु उत्पन्न हो जावें। घर से बाहिर रहने की स्थिति उत्पन्न हो जावे।

आर्थिक—स्वक्षेत्र मंगल पर शुभ प्रभाव के कारण धन प्राप्ति का अच्छा योग है। गुरुजनों से लाभ की आशा भी रखनी चाहिये। भाग्य में वृद्धि हो।

भूमि—शनि आदि का बुध पर पृथकता जनक प्रभाव होने से भूमि वियोग की स्थिति उत्पन्न होती है न कि भूमि लाभ की।

कर्मचारी—बुध पर शनि तथा राहु के प्रभाव के कारण तबदीली का शीघ्र योग बनता है सूर्य पर शनि राहु के प्रभाव के कारण उच्च पदाधिकारियों से न पिटने के योग की उत्पत्ति हो रही है।

व्यवसाय—बुध सप्तमेश की स्थिति सन्तोष जनक नहीं। व्यापार में हानि का योग है। भागीदारों से वैमनस्य का योग है। कपड़े आदि के व्यापार में हानि का योग है। पन्ना पहनने से इस दिशा में कुछ सुधार हो।

स्त्रियां—सप्तमेश बुध पर अधिक पृथकता जनक प्रभाव है अतः वैवाहिक जीवन में अचानक वैमनस्य की सृष्टि की संभावना है। पुखराज पहनने से इस दिशा में कुछ सुधार की संभावना है।

छात्र—यद्यपि मंगल द्वितीय भाव में स्वक्षेत्री है तो भी बुध शनि तथा राहु से पीड़ित है और मंगल पर भ राहु का प्रभाव है। अतः प्रतिभा शाली विद्यार्थियों को भी सचेत रहने की आवश्तकता है·

चन्द्राष्टम—२१ नवम्बर रात्रि १० बजकर १९ मिनिट से २४ नवम्बर प्रातः ७ बजकर ५४ मिनिट तक।

